राजस्थान का इतिहास

हस्तलिखित नोट्स by Aadarsh Sir

REET, पटवार,वनपाल, वनरक्षक,BSTC,PTET,ग्रामसेवक

ऐसे ही आपको हर विषय के नोट्स उपलब्ध कराते रहेंगे, आप RAJASTHAN CLASSES CHANNEL को SUBSCRIBE जरुर कर लीजिए डेली क्लास ज्वाइन करें पूर्णत निशुल्क

नोट-अपने प्रयास से सभी तथ्य सही किए है – फिर भी किसी प्रकार की त्रुटी पाई जाती है

तो राजस्थान क्लासेज जिम्मेदार नही होगा, आप सम्पर्क कर सकते है! Whatsapp- 8107670333

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत
राजस्थान क्लासेज : 8107670333

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh Kumawat

राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं

सैन्धव सभ्यता का ज्ञान = youtube- Rajasthan classes

सन् 1920-22 में हड़प्पा तथा 1922-23 में मोहनजोदड़ो के खनन से भारत में 2500 ई.पू. की सैंधव सभ्यता का ज्ञान हुआ।

⇒ राजस्थान में नागौर में (लूनी नदी बेसिन में) जायल व डीडवाना आदि स्थानों पर निम्न पुरापाषाणकालीन अवशेष पाए गए है।

⇒ बूढ़ा पुष्कर (अजमेर) में उत्तर पुरापाषाणकालीन अवशेष पाए गए है।

⇒ तिलवाड़ा (बाड़मेर), बागोर शीलवाड़ा पुरातात्विक स्थलो से मध्य पाषाणकालीन लघु आकार के उपकरण मिले।

⇒ नव पाषाणकालीन (युगीन) के कोई प्रमाण राजस्थान में नही मिले।

विभिन्न प्रमुख उत्खनित स्थलों का विवरण

⇒ कालीबंगा = (हनुमानगढ़)

सर्वप्रथम खोज = अमलानंद घोष द्वारा सन् 1952 में

उत्खनन = बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर, 1961 से 1969 तक

स्थिति = हनुमानगढ़ जिले में प्राचीन सरस्वती (घग्घर) नदी के तट पर।

- हड़प्पा कालीन सभ्यता एवं पूर्व हड़प्पा कालीन सभ्यता (2350-1750 ई.पू.) के अवशेष मिले है यहां पर।

⇒ यह एक नगर प्रधान सभ्यता थी।

⇒ यहां की बस्ती एक दीवार (परकोटे) से सुरक्षित की गई यह उत्तर से दक्षिण 250 मी. लम्बी एवं पूर्व से पश्चिम 180 मीटर की थी।

मकान पक्की व कच्ची ईंटो के बनाए गए थे। जिसका आकार इस प्रकार है (30×20×10 से.मी.)

गन्दे पानी के निकास हेतु पक्की ईंटो की नालियां एवं शोषण पात्रो का प्रयोग।

परकोटे के बाहर विश्व में एक जुते हुए खेत का प्राचीनतम (पहला) साक्ष्य मिला है।
- यहां एक कब्र मिली, कालीबंगी शवो को गाड़ते थे।

आहड़ (उदयपुर) ताम्रवती नगरी, आघाटपुर, बनास संस्कृति
उत्खनन = सर्वप्रथम 1954 में RC अग्रवाल व 1961-62 में वी. एन मिश्रा एवं एच. डी. सांकलिया द्वारा 1800 ई.पू. से 1200 ई.पू. की ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले।

→ बनास की सहायक नदी बेड़च के किनारे आहड़ गांव के एक ऊंचे टीले धूलकोट का उत्खनन

→ मकानो से अधिक से अधिक चूल्हे प्राप्त हुए। जो बड़े परिवार या सामूहिक भोजन व्यवस्था के प्रतीक। मातृदेवी एवं बैल की मृण्मूर्ति प्राप्त।

रंगमहल = (हनुमानगढ़) रंगमहल घग्घर नदी के पास स्थित है।
उत्खनन - डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में 1952-54 ई. में खुदाई गान्धार शैली की मृणमूर्तियां, यहां गुरु-शिष्य की मूर्ति मिली, कुषाणकालीन एवं पूर्व गुप्तकालीन सभ्यता के अवशेष।

पीली बंगा = (हनुमानगढ़)

नोह = (भरतपुर) यहां के चित्रित सलेटी रंग एवं गैरू रंग के पात्रों के अवशेष मिले हैं।

गिलूण्ड (राजसमंद) = ताम्रयुगीन सभ्यता
बनास नदी के पास गिलूण्ड में ताम्रयुगीन एवं बाद के अवशेष

बागोर = (भीलवाड़ा) - बागोर का उत्खनन 1967-69 में डॉ. वी.एन. मिश्रा व डॉ. एल. एस. लैशनि द्वारा करवाया गया, मध्य पाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष मिले राजस्थान में यहां सबसे प्राचीन पशुपालन की अस्थियों के अवशेष मिले, बागोर को आदिम संस्कृति का संग्रहालय कहा जाता है

ओझियाना, जहाजपुर - महाभारत कालीन सभ्यता के अवशेष मिले।

बालाथल - (उदयपुर) - ताम्रपाषाण युगीन सभ्यता, उत्खनन - 1993 में बी.एन. मिश्र के नेतृत्व में वल्लभनगर में किया
- ग्यारह कमरों वाला विशाल भवन बालाथल सभ्यता से प्राप्त हुआ।
- यहां पशुपालन, कृषि, शिकार, ताम्बे के आभूषण, अवशेष मिले।

→ आहड़ सभ्यता = यह सभ्यता 4000 वर्ष पुरानी सभ्यता है। जिसकी खोज 1953 ई. में अक्षय कीर्ति व्यास ने की सर्वप्रथम उत्खनन रतनचन्द्र अग्रवाल (R.C. अग्रवाल) ने तो सर्वाधिक उत्खनन पूना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हंसमुख धीरज लाल सांकलिया (एच.डी. सांकलिया) ने
-
- यहां ताम्बे गलाने की भट्टी, मिट्टी से बनी बैल आकृति प्राप्त हुई जिसे 'बनासियल बुल' की संज्ञा दी गई। छपाई करने के ठप्पे, आटा पीसने की चक्की, अनाज की मिट्टी की कोठी, जिसे गौरे (कोट नाम से जाना गया। ये लोग चावल से परिचित थे. लेकिन चान्दी धातु से अपरिचित थे
- आहड़ स्थान में मुर्दों के सिर को उत्तरी ओर रखकर दफनाने के प्रमाण मिले है।

झाड़ोल सभ्यता = (उदयपुर)

By Aadarsh Kumawat

→ गणेश्वर सभ्यता (नीम का थाना - सीकर)
कातली नदी के किनारे एक टीले पर खुदाई कार्य।
ताम्र पाषाण युगीन सभ्यता,
यहां सबसे प्राचीन ताम्बे के उपकरण मिले, इसलिए इसे ताम्र सभ्यता की जननी कहते है।
यहां पर ताम्बे का मछली पकड़ने का कांटा एवं बाण मिले।
उत्खनन पूर्व हड़प्पा कालीन में ताम्र युगीन उपकरण कुल्हाड़े आदि बड़ी मात्रा मे मिले, भारत में किसी स्थान पर एक साथ इतने उपकरण प्रथम बार मिले।

गुरारा सभ्यता = चान्दी के 2744 पंचमार्क सिक्के प्राप्त हुए।

बैराठ सभ्यता - जयपुर (दयाराम साहनी द्वारा 1936-37) में उत्खनन किया गया।
प्राचीन मत्स्य जनपद की राजधानी विराट नगर में बीजक की पहाड़ी, भीमजी की डुंगरी, व महादेव डुंगरी आदि स्थानो पर उत्खनन कार्य।
- मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष, उससे पूर्व के अवशेष भी
- बीजक की पहाड़ी से अशोक कालीन गोल बौद्ध मन्दिर एवं बौद्ध मठ के अवशेष मिले है जो हीनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित है।
- खाद्यान्न में गेंहू व चावल का प्रयोग
- मुख्य व्यवसाय कृषि व पशुपालन था
- सूती कपड़े में बंधी मुद्राएं व पंचमार्क सिक्के मिले।
- आहत / पंचमार्क सिक्के, भारत के सबसे प्राचीन सिक्के।
- शैल चित्रकला के ऐतिहासिक प्रमाण मिले है।
- विराटनगर स्थान शंख लिपि से सम्बन्धित है।
→ बाणगंगा नदी के मुहाने पर विकसित,
- 1837 ई. में कैप्टन बर्ट द्वारा यहां भाब्रू शिलालेख की खोज।
- जयपुर के राजा रामसिंह के काल में खुदाई करने पर स्वर्ण मंजूषा प्राप्त हुआ (कलश)

By Aadesh Kumawat

जिसमें भगवान बुद्ध की अस्थियों के अवशेष थे।

नलियासर सभ्यता = यह सभ्यता सांभर में है।
यहाँ से प्रतिहार कालीन मन्दिर व चौहान युग से पूर्व की जानकारी प्राप्त होती है।

⇒ जोधपुरा सभ्यता (जयपुर) - शुंग एवं कुषाणकालीन सभ्यता के अवशेष तथा लोह उपकरण बनाने की भट्टियां प्राप्त।

रेड/रहड़ सभ्यता (टोंक)
पूर्व गुप्तकालीन लोहे सामग्री का विशाल भंडार प्राप्त।
प्राचीन भारत का टाटानगर।
एशिया का सबसे बड़ा सिक्को का भंडार (अपोलोडोट्स व इण्डोससेनियन)

नगर सभ्यता - इसका प्राचीन नाम मालव नगर था,
बड़ी संख्या में मालव व आहत सिक्के तथा गुप्त कालीन लेख प्राप्त हुए।
उत्खनन = डॉ. एन. के पुरी के निर्देशन में उनियारा कस्बे के पास।

⇒ नगरी/मध्यमिका (चित्तौड़गढ़) - उत्खनन - 1904 में भंडारकर ने शिवि जनपद के सिक्के, गुप्तकालीन कला के अवशेष।

⇒ सुनारी (खेतड़ी झुन्झुनु) - लोहे राज व बर्तन प्राप्त।
लोहे के अयस्क से लोहा बनाने की प्राचीनतम भट्टी का उल्लेख

⇒ तिलवाड़ा (बाड़मेर) लूणी नदी के किनारे स्थित।
⇒ सरखान वाला, अनूपगढ़, चक्चोरासी = गंगानगर
⇒ डीडवाना, जायल, व कुराड़ा (नागौर) ताम्बे के औजारों की नगरी
⇒ ओला, लोद्रवा, कुण्डा, सोनू (मेंचूहे के दांत) = जैसलमेर
⇒ मण्डोर (रावण का चंवरी व मंडप), बिलाड़ा = जोधपुर
⇒ सांवलिया, पूंगल, सोथी = बीकानेर (खोज - अमलानंद घोष द्वारा)
⇒ चन्द्रावती = गरुड़ासन पर विराजित विष्णु की मूर्ति (सिरोही)

By Aadesh Kumawat

राजस्थान के प्रमुख नगर एवं उनके संस्थापक

- चित्तौड़गढ़ - चित्रांगद मौर्य ने चित्रकूट नाम से बसाया
- प्रतापगढ़ - महारावल प्रतापसिंह ने 1699 ई. में
- बांसवाड़ा - जगमाल सिंह द्वारा बसाया गया
- डूंगरपुर - डूंगर सिंह द्वारा 1358 ई. में
- राजसमंद - महाराणा राजसिंह द्वारा बसाया गया
- उदयपुर - महाराणा उदयसिंह ने 1559 ई. में

- कोटा - महाराव माधोसिंह
- झालावाड़ - झाला जालिम सिंह द्वारा
- बून्दी - बून्दी को बूंदा मीणा ने बसाया एवं 1241 ई. में राव देवीसिंह हाड़ा ने अपना राज्य बनाया।
- बारां - सोलंकी राजपूतों द्वारा बसाया गया ~~नगर~~ 14 वी शताब्दी में इस क्षेत्र में बारह गांव आते थे।

- भरतपुर - सूरजमल जाट द्वारा
- धौलपुर - तोमर वंश के राजा धवल ने
- करौली - यदुवंशी राजा अर्जुनसिंह ने कल्याणपुरी नाम से बसाया

- अलवर - 1770 ई. में राव प्रताप सिंह कच्छवाहा ने
- सीकर - राव दौलत सिंह ने बसाया
- झुंझुनू - मोहम्मद खां ने बसाया ~~एक~~ अन्य उल्लेखानुसार झुंझा नामक जाट ने (1451-88) में
- जयपुर - सवाई जयसिंह द्वितिय ने 18 नवम्बर 1727 में बसाया, वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य थे।

- हनुमानगढ़ -
- चुरू - 1620 ई. में चूहड़ नाम जाट ने।
- गंगानगर - गंगासिंह द्वारा (आधुनिक भारत का भागीरथ)
- बीकानेर - राव जोधा (जोधपुर) के पुत्र राव बीका ने 1465 से बीकानेर रियासत के निर्माण के प्रयास प्रारम्भ एवं 1488 में बीकानेर शहर की स्थापना की गई।

By Aabhish Kumawat

⇒ जैसलमेर = भाटी राजपूत राव जैसल द्वारा 12वीं सदी में
⇒ जोधपुर = 13 मई 1459 में राव जोधा ने बसाया
सर्वप्रथम हरिश्चन्द्र प्रतिहार द्वारा बसाया गया।
मंडोर मारवाड़ की राजधानी थी, जहां बौद्ध धर्म व जैनधर्म की वास्तुकला के नमूने मिले।

⇒ बाड़मेर = बाड़देव ने 1246 ई. में बाड़मेर बसाया
⇒ सिरोही = सहसमल ने 1425 ई. में बसाया

⇒ टोंक = टोंक को भोला ब्राह्मण ने भूमगढ़ नाम से बसाया था
1817 ई में अमीर खां पिंडारी ने अपनी रियासत केन्द्र बनाया
एकमात्र रियासत जहां मुस्लिम नवाबो ने शासन किया।
अमीर खां पिंडारी को राजस्थान के कोटा के जालिम सिंह ने संरक्षण दिया।

⇒ अजमेर = अजयपाल चौहान द्वारा 1113 ई. में बसाया गया
⇒ ब्यावर = ब्यावर को कर्नल डिक्सन ने बसाया।

प्रदेश के रियासतकालीन प्रमुख सिक्के

जोधपुर = विजयशाही, भीमशाही, गधिया, फदिया, लल्लूलिया, ढब्बूशाही
जैसलमेर = अखैशाही, मुहम्मदशाही, डोडिया (ताम्बे) का
पाली = लल्लूलिया नामक रुपया।
उदयपुर (मेवाड़) - प्राचीन क्रम, चान्दोडी, स्वरूपशाही, त्रिशुलिया
ढींगला, उदयपुरी, चित्तौड़ी, भीलाड़ी, गधिया, टका, दिरहम
भीडरिया, नाथद्वारिया, शाहआलमशाही, एलची (मुगलकालीन)
जयपुर = झाड़शाही, मुहम्मदशाही, हाली सिक्के।
अजमेर = रूपक व दीनार सिक्के।
बून्दी = रामशाही, कटारशाही, चेहरेशाही, सिक्के
कोटा = झालिमशाही, लक्ष्मणशाही, गुमानशाही
डूंगरपुर = उदयशाही सिक्का, झालावाड़ = मदनशाही सिक्का
बांसवाड़ा = सालिमशाही, लक्ष्मणशाही सिक्के। प्रतापगढ़ = आलमशाही
बीकानेर - गजशाही, रावशाही - अलवर, तमचाशाही - धौलपुर,

By Aadesh Kumawat

। अन्य सभी सभ्यताएँ (पुरातात्विक स्थल)

- भीनमाल (जालौर) - गुप्तकालीन अवशेष
- दर (भरतपुर) पाषाणकालीन सभ्यता
- सोंथी (बीकानेर) अमलानन्द घोष द्वारा खोज
- ईसवाल (उदयपुर) : इस स्थान पर लौहकालीन अवशेष
- डडीकर (अलवर) 5 से 7 हजार पुराने शैल चित्र
- गरदड़ा (बून्दी) छाजा नदी के किनारे
  बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग (शैल-चित्र) मिली
  यह देश में प्रथम पुरातत्व महत्व की पेंटिंग है (2003)

कोटड़ा (उदयपुर) : सातवी से बारहवी शताब्दी के पुरा अवशेष

तिपटिया (कोटा) - दर्रा वन्य जीव अभयारण्य में स्थित
डाडा थोरा (बीकानेर) पाषाणकालीन सभ्यता के अवशेष

मल्लाह (भरतपुर) स्थल - घनापक्षी विहार अभ्यारण्य में स्थित

नैनवां (बून्दी) कृष्णदेव द्वारा खुदाई
लगभग 2000 वर्ष पुरानी महिषासुर मर्दिनी की मृणमूर्ति

कणसव (कोटा) - मौर्य शासक धवल का 738 ई. से
सम्बंधित लेख मिला है।

By Aadarshkumawat

विभिन्न नगरों के प्राचीन उपनाम

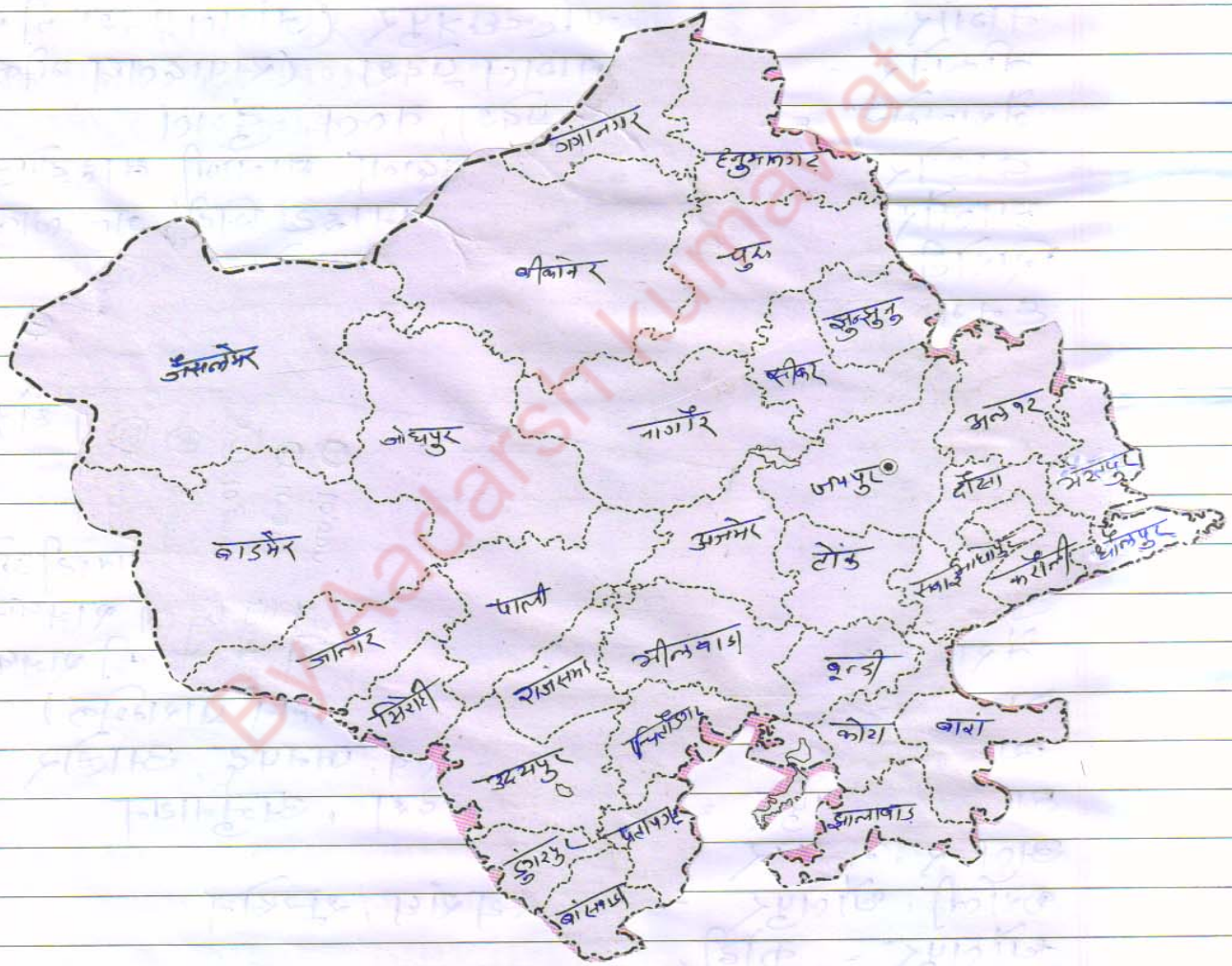

By Aadarsh kumawat

नगरों के प्राचीन उपनाम

जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर = मरुत्रिकोण
जालौर, पाली, बाड़मेर, जोधपुर = गोडवाण
मण्डोर = माण्ड्यपुर
रूणेचा = रामदेवरा
जोधपुर = मारवाड़, मरुधर, सूर्यनगरी, मरुवाड़
जालौर = नेहड़, सत्यपुर
नागौर = अहिच्छत्रपुर (जांगल प्रदेश की राजधानी)
बीकानेर = जांगल प्रदेश (सपादलक्ष भी कहा जाता)
जैसलमेर = मांड प्रदेश, वल्ल, डुंगल
बाड़मेर = श्रीमाल, बादाणा, मालाणी, बाहड़मेढ़
जालौर = जाबालिपुर, ग्रेनाइट सिटी, जलालाबाद
सिरोही = आर्बुद, चन्द्रावती, देवड़ावटी
हनुमानगढ़ = चुंघर, भटनेर
गंगानगर = रामू जाट की ढाणी, रामनगर
श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ = योद्धेय प्रदेश (नाली क्षेत्र)
श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, बीकानेर] थली क्षेत्र
चुरू, झुन्झुनु, सीकर = बागड़ प्रदेश, शेखावाटी प्रदेश
जयपुर = ढूंढाड़ (आमेर, ढूंढाड़ की राजधानी)
बैराठ = विराटनगर (मत्स्य ~~संघ~~ की राजधानी)
साम्भर = सपादलक्ष (चौहान प्रारम्भिक)
अलवर = कुरुक्षेत्र, शाल्व, जनपद, आलोर
अलवर, भरतपुर = मेवात प्रदेश, अर्जुनायन
अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर] मत्स्य संघ, शूरसेन
धौलपुर = कोढी,
भरतपुर = बयाना, श्रीपंथ
करौली = गोपालपाल
करौली, सवाईमाधोपुर = डांग क्षेत्र, बीहड़
टोंक = प्राचीन भारत का टाटानगर
टोंक, भीलवाड़ा = खैराड़ व माल खैराड़

By Aadarsh Kumawat

कोटा, बून्दी, बारां, झालावाड़ = हयहय प्रदेश, हाड़ौती
झालावाड़ = ब्रजनगर, सिटी ऑफ वेल्स, खीचीवाड़ा
कोटा = नन्द गांव
झालरापाटन = ब्रज नगर
भीलवाड़ा = ऊपरमाल
प्रतापगढ़, बांसवाड़ा = काठल, छप्पन का मैदान
राजसमंद, उदयपुर = मेवाड़ का पठारी भाग
झालावाड़, प्रतापगढ़ = मालव प्रदेश
डूंगरपुर, बांसवाड़ा = वागड़, बांगड़ (दक्षिणी भू-भाग)
मेवल = बांसवाड़ा व डूंगरपुर (मध्य के भू-भाग)
उदयपुर = शिवि जनपद, देशहरो

By Aadarsh kumawat

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Adarsh Kumawat

जिलो व नगरो के आधुनिक नाम -

जैसलमेर = • राजस्थान का अंडमान
• राजस्थान की स्वर्ण नगरी
• हवेलियों का शहर
• पीले पत्थरों का शहर
• रेगिस्तान का गुलाब
• झरोखो की नगरी
• पंखो की नगरी
• म्यूजियम सिटी
• विंड सिटी

जोधपुर = • राजस्थान की ब्लू सिटी
• मरुस्थल का प्रवेश द्वार
• सूर्यनगरी व सनसिटी
• पोलो का घर
• राज्य की सांस्कृतिक राजधानी

बाड़मेर = • किराडू (राजस्थान का खजुराहो)
• पीपलूद = मारवाड़ का लघु माउंट

बीकानेर = • ऊन का घर
• राती घाटी

जालोर = राजस्थान की ग्रेनाइट सिटी, सुवर्णनगरी

श्रीगंगानगर = बागानों की भूमि, धान का कटोरा
राजस्थान का अन्नागार
उत्तरी राजस्थान का प्रवेश द्वार

हनुमानगढ़ - • फलो की टोकरी

सूरतगढ़ = आधुनिक विकास तीर्थ स्थल
(सूरतगढ़ ताप विद्युत ग्रह)

By Aadarsh Kumawat

नागौर = राजस्थान का धातु नगर | नगरी
औजारो की नगरी

डीडवाना (नागौर) राजस्थान की उपकाशी

लूणकरणसर (बीकानेर) राजस्थान का राजकोर
मिंडदेवरा (बारां) राजस्थान का मिनी खजुराहो
बून्दी : राजस्थान की काशी
जयपुर : द्वितीय या छोटी काशी
बांसवाड़ा : राजस्थान की लोदी काशी

जयपुर :- राजस्थान की राजधानी
पन्ना नगरी
रत्न नगरी
रंग भी द्वीप, वैभव का द्वीप
पूर्व का पेरिस
पिंक सिटी, हेरिटेज सिटी
सिटी ऑफ आइसलैण्ड, छोटी काशी

अलवर : राजस्थान का सिंह द्वार
राजस्थान का स्कॉटलैण्ड
राजस्थान का पूर्वी कश्मीर
राष्ट्रीय राजधानी मे शामिल

भरतपुर : राजस्थान का प्रवेश द्वार
राजस्थान का पूर्वी सिंह द्वार

धौलपुर : रेड डायमण्ड
राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार

By Aashish Kumawat

करौली : डांग की रानी

अजमेर : राजस्थान का हृदय
राजस्थान का नाका
भारत का मक्का
अरावली का अरमान
राजस्थान की अण्डे की टोकरी
राजपुताना की कुंजी

भिवाड़ी : राजस्थान का आधुनिक
एवं नवीन मेनचेस्टर

बून्दी : राजस्थान की काशी
बावड़ियों का शहर
बूंदावती

बारां : राजस्थान का मिनी खजुराहो
(मिंडदेवरा)
वराह नगरी

झालावाड़ : राजस्थान का नागपुर
राजस्थान का चेरापूंजी
सर्वाधिक उत्पादन वाला जिला
सिटी ऑफ वेल्स

कोटा : राजस्थान का कानपुर
शिक्षा का तीर्थस्थल
उद्योगों का नगर
राजस्थान की औद्योगिक नगरी
राजस्थान का सोया जिला
इन्द्रप्रस्थ नगर।

By Aadarsh Kumawat

चित्तौड़गढ़ : राजस्थान का गौरव
डूंगरपुर : पहाड़ो की नगरी

उदयपुर : झीलो की नगरी
राजस्थान का कश्मीर
पूर्व का वेनिस
झीलो का स्वर्ग
फाउन्टेन का शहर
लेक सिटी ऑफ इण्डिया
एशिया का वियना
जिंक नगरी, आस्ट्रेलिया जैसी आकृति

हल्दीघाटी (राजसमंद) : राजस्थान की थर्मोपोली

आबू : राजस्थान का शिमला
राजस्थान का वर्षोयास्क

जसवंतथड़ा (जोधपुर) : राजस्थान का ताजमहल
अबली मीणी का महल : राजस्थान का दूसरा ताजमहल

जगतअम्बिका (उदयपुर) : मेवाड़ का खजुराहो

पुष्कर : तीर्थराज, तीर्थो का मामा
कोकण तीर्थ, पंचम तीर्थ
गुलाबो की नगरी

बांसवाड़ा : सौ द्वीपो का शहर
आदिवासियो का शहर
राजस्थान मे मानसून का प्रवेश द्वार
राजस्थान की लोदी काशी।

By Aadarsh Kumawat

मेवाड़ का हरिद्वार = मातृकुण्डिया, (चित्तौड़गढ़)
राजस्थान का हरिद्वार : पुष्कर

नाथो का दुर्ग : कोटकास्ता दुर्ग (जालौर)
नाथो का तीर्थ : महामन्दिर (जोधपुर)
कनफटे नाथो का तीर्थ : भर्तृहरि मेला

पोलो का मक्का = जयपुर
थार का घड़ा = चांदन नल कूप (जैसलमेर)

तीर्थो का मामा = पुष्कर, अजमेर
तीर्थो का भांजा = मचकुण्ड, धौलपुर
तीर्थो की नानी : देवयानी, सांभर

व्हाइट सिटी = उदयपुर
हाड़ौती का खजुराहो = भिंडदेवरा (बारां)

मेरवाड़ का कुम्भ = पुष्कर मेला, अजमेर
मारवाड़ का कुम्भ : रामदेव मेला, जैसलमेर
हाड़ौती का कुम्भ : सीताबाड़ी मेला, बारां
भीलो का कुम्भ : बेणेश्वर मेला, डूंगरपुर
वागड़ का कुम्भ : —"—
आदिवासियो का कुम्भ : —"—
मरु कुम्भ : सुईया मेला (बाड़मेर)

मारवाड़ का जलमहल = बाटाडू (बाड़मेर)
रेगिस्तान का जलमहल : —"—

By Aadarsh Kumawat

" राजस्थान का इतिहास "

पौराणिक काल

रामायण व महाभारत काल में राजस्थान में मरु-जांगल व मत्स्य जांगल प्रदेश विद्यमान थे।

- पांडवो ने वन प्रवास का तेहरवां वर्ष (अज्ञातवर्ष) राजा विराट की राजधानी विराटनगर (बैराठ) में व्यतीत

जनपद युग

- राजस्थान में आर्य आक्रमण के बाद अनेक जनपद हुए अभिलेखो के अनुसार- पूर्वी राज. में ब्राह्मण व बौद्ध संस्कृति पनपी

- प्रमुख जनपदों में = भरतपुर का राजन्य, जयपुर का मत्स्य नगरी का शिवि, अलवर का - सल्व (शाल्व)
- मत्स्य जनपद - अलवर व जयपुर का क्षेत्र, राजधानी - विराटनगर
- कुरु जनपद : वर्तमान उत्तरी अलवर का क्षेत्र, राजधानी : इन्द्रप्रस्थ लेकिन आधुनिक काल में कोटा को इन्द्रप्रस्थ नगर कहा जाता।
- शूरसेन जनपद : वर्तमान पूर्वी अलवर, धौलपुर, भरतपुर तथा करौली, राजधानी = मथुरा

मौर्य युग (मौर्य काल)

- राजस्थान में मौर्य सम्राट अशोक के अभिलेख बैराठ से मिले
- कणसवा (कोटा) अभिलेख से ज्ञात होता है कि यहां मौर्य शासक धवल का शासन था।

- मौर्य राजा चित्रांगद मौर्य ने चित्तौड़गढ़ की स्थापना की जिसके वंशज मौर्य मान राजा को बप्पा रावल ने हराकर चित्तौड़गढ़ दुर्ग जीता।
- मौर्यकाल में राजस्थान, सिंध, गुजरात, कोंकण जनपद मिलकर अपर जनपद या पश्चिम जनपद कहलाते थे।
- यवन शासक मिनाण्डर (मिलिंद) ने 150 ई.पू. में मध्यमिका नगरी को जीता था।

BY Aadarsh Kumawat

गुप्तकाल

- गुप्तों के उदय से पूर्व राजस्थान पर शकों का शासन था। रुद्रदामा द्वितीय शक,
- समुद्रगुप्त ने रुद्रदामा द्वितीय को हराकर दक्षिणी राजस्थान को अपने साम्राज्य में मिलाया
- भरतपुर में गुप्त राजाओं के अनेक सिक्के मिले।

हूणों का आक्रमण

- हूण राजा तोरमाण ने 503 ई. में गुप्त राजाओं को हराकर राजस्थान में अधिकार स्थापित किया
- तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल ने बड़ौली (कोटा) में एक शिव मन्दिर का निर्माण करवाया
- मिहिरकुल हूणों का सबसे प्रसिद्ध शासक था हिंसाप्रिय व अत्याचारी होने के कारण उसे भारत का अटिल्ला भी कहा गया है।
-
- गुप्त शासक नरसिंह गुप्त बालादित्य ने मालवा के यशोवर्मा से मिलकर मिहिरकुल को हराया अर्थात राजस्थान पर पुनः अधिकार
- मेवाड़ के शासक अल्लट ने हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह किया।

वर्धन युग एवं गुर्जर आक्रमण

- हूण सत्ता पतन के बाद 7 वी सदी में राजस्थान पर गुर्जरों ने अपना अधिकार एवं राजधानी भीनमाल बनाया
- प्रभाकर वर्धन ने गुर्जरों को हराकर वर्धन सत्ता स्थापित की
- प्रभाकर के पुत्र हर्षवर्धन के साम्राज्य में राज० का अधिकतर भाग
- हर्ष की मृत्यु के बाद राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में राजपूत राज्यों की सत्ता स्थापित हुई।
- सातवी से बारहवीं सदी इतिहास में राजपूत काल के नाम से।

By Aadarsh Kumawat

राजस्थान में राजपूत युग

= सातवी से बारहवीं सदी इतिहास में राजपूत काल के नाम से जानी जाती है।

= प्रारम्भिक राजपूत वंश

मेवाड़ = गुहिल

मारवाड़ : प्रतिहार एवं बाद मे राठौड़

सांभर : चौहान वंश

आमेर = कच्छवाहा वंश

जैसलमेर = भाटी वंश

राजपूतों की उत्पति के विषय में प्रचलित अनेको मत

① कर्नल जेम्स टॉड, बी.ए. स्मिथ, कुक के अनुसार राजपूत विदेशी जातियों शको, पहलवो के वंशज अर्थात विदेशी है।

② चन्दबरदाई द्वारा रचित पृथ्वीराज रासौ के अनुसार राजपूतो की उत्पति अग्निकुण्ड से मानी जाती है।

मुहनोत नेणसी व सूर्यमल्ल मिश्रण व चन्द के अनुसार राजपूतो की उत्पति मुनि वशिष्ट ने आबू पर्वत पर यज्ञ से चार योद्धाओ प्रतिहार, परमार, चौहान, चौलुक्य को उत्पन्न किया और जिनमें ये चार वंश शुरु हुए।

③ प्राचीन क्षत्रियो से उत्पति - सूर्य व चन्द्रवंशीय सिद्धान्त प्रतिपादक = डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

④ मिश्रित उत्पति सिद्धान्त = तीनो सिद्धान्तो का माना जाता है। क्षत्रियो से उत्पति के साथ-2 ब्राह्मणो से भी उत्पति मानते है। अन्तिम मत अधिक स्वीकार्य है।

By Aadarsh Kumawat

- महत्वपूर्ण तथ्य -

= बसन्तगढ़ शिलालेख (सिरोही) में राजस्थान का नाम राजस्थानादित्य दिया गया यह शिलालेख चावड़ा वंश से सम्बन्धित है। चावड़े का सबसे प्राचीन राज्य भीनमाल था

: सर्वप्रथम राजस्थान को (1800 ई.) में मौखिक रूप से राजपुताना नाम जॉर्ज थॉमस ने

: 19वीं शताब्दी का प्रथम इतिहासकार "कर्नल जेम्स टॉड" राजस्थान के इतिहास लेखन का पितामह था।
: कर्नल जेम्स टॉड ने राजपुताना को सर्वप्रथम रायथान, रजवाड़ा, राजस्थान शब्द का प्रयोग, अपनी पुस्तक - एनाल्स एण्ड एन्टिक्विटिज ऑफ राजस्थान - द सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इण्डिया इस पुस्तक में राजस्थान की सामन्तवादी जमींदारी, जागीरदारी, फ्यूडलिज्म व्यवस्था के बारे में,

By Aadarsh Kumawat

youtube - Rajasthan classes

राजस्थान के प्रमुख राजवंश एवं प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएं

⇒ मेवाड़ राज्य (गुहिल एवं सिसोदिया वंश)

⇒ मेवाड़ : सर्वप्रथम मेद अथवा मेर या मेव जाति का अधिकार रहने से मेदपाट (मेवाड़) पड़ा।

⇒ मेवाड़ के प्राचीन नाम : शिवि, प्राग्वाट, मेदपाट

⇒ अन्य राज्यो के राजवंशों के भी उदयपुर का राजवंश अधिक प्राचीन राजवंश है।

⇒ इतने समय (राजवंश से लेकर राजस्थान निर्माण तक) तक एक ही प्रदेश पर राज्य करने वाला संसार में एकमात्र यही राजवंश है।

⇒ जब अन्य सभी राजाओं ने मुगल साम्राज्य की शासन सत्ता के सामने अपनी स्वतंत्रता स्थिर न रख सके तब भी अनेको प्रकार के कष्ट सहते हुए भी उदयपुर राज्य ने अपनी स्वतंत्रता और कुल गौरव की रक्षा की।

⇒ तो आज भी उदयपुर के महाराणा हिन्दुआसूरज कहलाते हैं।

⇒ उदयपुर राज्य के राज चिन्ह पर अंकित शब्द जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहि राखै करतार, उनकी स्वतंत्रता प्रियता व धर्म पर दृढ़ रहने को स्वयंमेव ही स्पष्ट करता है।

⇒ गुहिल या गुहादित्य ⇐

⇒ मेवाड़ के इतिहास की कहानी गुहिल (गुहादित्य) के काल से प्रारम्भ होती है।

⇒ भगवान रामचंद्र के पुत्र कुश के वंशजो में से 566 ई. के लगभग मेवाड़ में गुहादित्य (गुहिल) राजा ने गुहिल वंश की नींव डाली।

⇒ पिता - शिलादित्य, माता - पुष्पावती

⇒ मिहिरकुल हूण वंशज को हराकर नागदा को राजधानी बनाया

By Aadarsh Kumawat

⇒ बापा रावल या कालभोज ⇐
शासन काल : (734-753) तक
⇒ बापा के इष्टदेव एकलिंगजी थे
⇒ एकलिंग के पुजारी हारीत ऋषि के आशीर्वाद से सन् 734 में बापा रावल ने मौर्य राजा मान मोरी से चित्तौड़ दुर्ग जीता।
- उस समय भी राजधानी नागदा ही रही।
- बापा रावल की मृत्यु नागदा में हुई
- उनका समाधिस्थल एकलिंगजी (कैलाशपुरी) से कुछ दूरी पर बापा रावल की छतरी बनी-

⇒ उदयपुर के राजा राजधानी छोड़ने से पूर्व एकलिंग जी की स्वीकृति लेते थे जिसे आसका लेना कहते।

⇒ सी.वी. वैद्य ने बप्पा रावल को चार्ल्स मार्टिल कहा।

⇒ अल्लट ⇐ आलूराव
- बप्पा रावल के वंशज अल्लट के समय मेवाड़ की बड़ी उन्नति हुई। हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह
- आहड़ उस समय एक समृद्ध नगर व एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र था।
- अल्लट ने आहड़ को अपनी दूसरी राजधानी बनाया
- अल्लट ने मेवाड़ में सबसे पहले नौकरशाही का गठन।

⇒ गुहिल एकलिंग जी के उपासक, स्वयं दीवान एवं एकलिंग को राजा कुलदेवता मानते थे।
- गुहिल व सिसोदिया वंश की कुलदेवी : बाणमाता
- गुहिल राजध्वज : उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित
⇒ मेवाड़ राज्य के सामन्त उमराव कहलाते थे।

By Adarsh Kumawat

⇒ गुहिल शासक शक्ति कुमार (977-993) ई. के समय में मालवा के परमार राजा मुंज ने चित्तौड़ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

⇒ मुंज के वंशज राजा भोज 1021-1031 ई. के मध्य चित्तौड़ मे रहा, त्रिभुवन नारायण शिव मन्दिर बनाया, जो अब मोकल का समिद्धेश्वर कहलाता है।

⇒ इसके बाद चालुक्य राजा सिद्धराज ने परमारों से मालवा व मेवाड़ का काफी क्षेत्र छीन लिया।

↓ दो शाखाओं का जन्म ↓

→ गुहिल शासक रणसिंह, जिसको कर्णसिंह भी कहते हैं 1158 ई. में मेवाड़ का शासक बना

⇒ रणसिंह के पुत्र क्षेमसिंह ने मेवाड़ की "रावल" शाखा बनाई

⇒ रणसिंह के अन्य पुत्र राहप ने सीसोदा ग्राम की स्थापना कर "राणा" शाखा की नींव डाली जो सिसोदा में रहने के कारण सिसोदिया कहलाएं।

- क्षेमसिंह के दो पुत्र: सामंतसिंह और कुमारसिंह

सामंतसिंह 1172 ई में मेवाड़ का शासक बना लेकिन नाडोल के चौहान राजा कीर्तिपाल (कित्तू) ने 1177 ई. में सामन्तसिंह से मेवाड़ छीन लिया।

- तब सामन्तसिंह ने वागड़ मे अपना राज्य स्थापित किया।

- कुमारसिंह द्वारा कीर्तिपाल को हराकर 1179 में पुनः मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

- कुमारसिंह, सामन्तसिंह का छोटा भाई था।

Dr. Aadish Kumawat

रावल जैत्रसिंह - (1213 - 1250 ई०)

⇒ कुमारसिंह वंशज का प्रतापी राजा
⇒ दिल्ली सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश ने नागदा पर आक्रमण (1222 - 1229) के मध्य किया इसका वर्णन हम्मीर-मान-मर्दन कृति में जो जयसिंहसूरि द्वारा कृत है। (मुतला का युद्ध कहा)

⇒ 1242-43 में गुजरात के त्रिभुवन से लड़ाई।
⇒ इल्तुतमिश के आक्रमण से परेशान होकर अपनी राजधानी नागदा से चित्तौड़ बनाई

समर सिंह (1273-1301)

इन्होने अमित सिंह सूरि के उपदेशो से अपने राज्य में जीव हिंसा की रोक लगाई।
- पुत्र - कुम्भकरण ने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की, दूसरे पुत्र रतनसिंह ने चित्तौड़ पर शासन किया।

⇒ रावल रतनसिंह - 1301 से 1303 तक
⇒ समर सिंह के पुत्र, रावल शाखा का अंतिम शासक।
⇒ दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने
⇒ चित्तौड़ पर 28 जनवरी 1303 में आक्रमण किया।
- व 26 अगस्त 1303 ई. को किला फतह किया
- यही चित्तौड़ का प्रथम साका था।
⇒ राजस्थान का दूसरा साका था इससे पहले अलाउद्दीन खिलजी के युद्ध से ही रणथम्भौर पर साका हुआ - जिसकी दिनांक 11 जुलाई 1301 ई. है
⇒ चित्तौड़ साके में रानी पद्मिनी के चाचा भतीजा रतनसिंह के सेनापति गोरा बादल वीरगति को प्राप्त हुए
⇒ योद्धाओ ने केसरिया व वीरांगनाओं ने पद्मिनी के साथ जौहर किया।

⇒ अलाउद्दीन ने चितौड़ का किला अपने पुत्र खिज्र खाँ को सौंपकर उसका नाम खिज्राबाद रख दिया।

⇒ प्रसिद्ध इतिहासकार अमीर खुसरो इस साके में अलाउद्दीन के साथ था।

⇒ रानी पद्मिनि सिंहल देश के राजा गन्धर्वसेन की पुत्री

⇒ रानी पद्मिनी के तोते का नाम हिरामनी था

अलाउद्दीन के आक्रमण के मुख्य कारण

① रावल रत्नसिंह की सुन्दर रानी को प्राप्त करने की लालसा

② चितौड़ दुर्ग का सामरिक महत्व व भौगोलिक स्थिति

③ अलाउद्दीन का अत्यधिक महत्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी होना।

⇒ 1313 के बाद सोनगरा चौहान मालदेव को अलाउद्दीन ने चितौड़ का प्रशासन सौंपा

⇒ हिरामन तोता (राय जाति का तोता, दर्रा अम्बारण्य व गागरोण में)

= राघव चेतन = रतनसिंह का विद्वान पण्डित जिसको रतनसिंह द्वारा देश निकाला दे दिया गया और वो अलाउद्दीन चरणों में चला गया।

राणा हम्मीर - (1326-1364)

⇒ गुहिल वंश की शाखा सिसोदा का वंश

⇒ अरिसिंह का पुत्र

⇒ जिसने सोनगरा चौहान मालदेव के पुत्र जैसा (जयसिंह) को पराजित कर चितौड़ को जीता (ओझा के अनुसार)

⇒ सिसोदिया वंश का संस्थापक, प्रथम राणा शासक

⇒ मेवाड़ का उद्धारक, एवं सिसोदिया साम्राज्य का संस्थापक

= उपाधियाँ = कीर्तिस्तम्भ स्तम्भ प्रशस्ति में - विषम घाटी पंचानन, रसिकप्रिया में "वीर राजा"

⇒ हम्मीर सिसोदिया ने सिंगोली के युद्ध (चितौड़गढ़) में दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक को पराजित किया

⇒ राणा क्षेत्रसिंह (राणा खेता) 1364-1382
- राणा हम्मीर का पुत्र
⇒ इन्होने बून्दी को अपने अधीन लिया

महाराणा लाखा (लक्षसिंह) 1382-1421
⇒ महाराणा खेता का पुत्र
⇒ राणा लाखा के काल में मगरा जिले के
⇒ जावर गांव में चांदी की खान की खोज की
चान्दी व सीसा का उच्च मात्रा में उत्खनन
⇒ कुंवर चूडा व राणा मोकल इनके पुत्र
⇒ राणा लाखा के समय पिछोला झील का
निर्माण छीतरमल बनजारे द्वारा करवाया गया।
⇒ वृद्धावस्था में मारवाड़ के शासक राव चूडा रणमल
की पुत्री व रणमल की बहिन हंसाबाई से विवाह
⇒ यह सशर्त हुआ और हंसाबाई से उत्पन्न
पुत्र को उत्तराधिकारी बनाने की सशर्त हुई।
⇒ राणा मोकल हंसाबाई का पुत्र था

राव चूडा
⇒ राणा लाखा का बड़ा पुत्र व हंसाबाई का सौतेला
- चूडा ने मेवाड़ का राज्य हंसाबाई के होने वाले
पुत्र को देने व जीवन भर कुवारा रहने की भीष्म प्रतिज्ञा ली
⇒ अतः इन्हे मेवाड़ का भीष्म पितामह व राज. का भीष्म

महाराणा मोकल 1421-1433
- राणा लाखा व हंसाबाई का पुत्र
⇒ राणा मोकल ने समद्विश्वर मन्दिर का जीर्णोद्धार
द्वारिकाधीश (विष्णु) का मन्दिर बनवाया।
⇒ राणा मोकल की हत्या महाराणा खेता की पासवान/खातिन
के पुत्र चाचा व मेरा नामक सामन्त ने 1433 में की।
⇒ अहमद खां के साथ हो रहे जीलवाड़ा युद्ध (चारभुजा, राजसमंद)
के मैदान में मैहपा पवार के कहने पर हत्या की।

महाराणा कुम्भा : (1433-1468)

⇒ मेवाड़ का महानतम शासक। जन्म : 1423 ई. में
⇒ राणा मोकल व सौभाग्यदेवी का पुत्र।
⇒ गुरु का नाम : जैनाचार्य हीरानन्द।
⇒ कुम्भा ने आचार्य सोमदेव को कविराज की उपाधि दी।
⇒ कुम्भा की पुत्री - रमाबाई, (वागीश्वरी) संगीतशास्त्र की ज्ञाता
⇒ कुम्भा ने अपने पिता का बदला चाचा, मेरा को मारकर लिया
⇒ सारंगपुर का युद्ध : मांडू सुल्तान महमूद से सन् 1437 में सारंगपुर के पास घोर युद्ध, कुम्भा विजयी

⇒ इस विजय के उपलक्ष में अपने उपास्यदेव विष्णु के निमित्त चित्तौड़ के किले में विशाल विजयस्तम्भ (कीर्तिस्तम्भ) बनवाया,
⇒ निर्माण : 1440 से 1448 ई तक बनकर पूर्ण।
⇒ कुल ऊँचाई - 120 फीट, इसमे 9 मंजिले. →
सम्पूर्ण हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां एवं शैली अलंकरण
⇒ इसे भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष कहा जाता है।
⇒ निर्माणकर्ता वास्तुकार : जैता इसके पुत्र, नापा, पोमा, पूंजा
⇒ कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति के रचयिता : कवि अत्रि, मृत्यु होने पर इस प्रशस्ति को अत्रि के पुत्र कवि महेश ने पूरा किया

⇒ राणा कुम्भा ने मेवाड़ में 32 किले, अनेक मन्दिर बनवाए
⇒ चित्तौड़ दुर्ग में - 1448 ई में कुम्भश्याम मन्दिर एवं आदिवराह मन्दिर, 1458 ई में - कुम्भलगढ़ दुर्ग, कुंभस्वामी मंदिर
⇒ 1452 में अचलगढ़ दुर्ग की प्रतिष्ठा की
⇒ बसन्तपुर (सिरोही राज्य) कस्बे को पुनः बसाया।
⇒ कुम्भलगढ़ दुर्ग का शिल्पी : मंडन था,
⇒ कुम्भलगढ़ के भीतर कटारगढ़, निवास हेतु बनाया
⇒ 1460 में कुंभलगढ़ प्रशस्ति का रचयिता भी कवि महेश ही था और पूर्ण किया।

By Aadarsh Kumawat

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh kumawat

Pdf को अपने मित्रो के साथ शेयर जरुर करें

⇒ महाराणा कुम्भा काल में रणकपुर के जैन मन्दिरों का निर्माण, 'खम्भों का अजायबर' कहते हैं।
- 1439 में एक जनश्रेष्ठि धरणकशाह ने करवाया
⇒ और धरणकशाह कुम्भा के दरबारी वित्त मंत्री थे।
- शिल्पी - देपाक के निर्देशन में।
⇒ कुल 1444 खम्भे एवं परिसर में वेश्या का मन्दिर
- चम्पानेर की संधि
⇒ मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी और गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन ने महाराणा कुम्भा को हराकर मेवाड़ को आपस में बांटने के लिए उस पर एक साथ मिलकर आक्रमण करने हेतु चम्पानेर में सन्धि की। 1456 में की गई
- 1457 में आक्रमण करने पर भी राणा नहीं हारे।
⇒ 1457 में मारवाड़, मेवाड़ जोधा व कुम्भा के मध्य आवणा बावणा संधि
⇒ महाराणा कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थ
- संगीत राज - सबसे बृहद्, सर्वश्रेष्ठ, सिरमौर
⇒ रसिकप्रिया - गीत गोविन्द की टीका में गीतगोविन्द के पद की राग-रागिनियों को निश्चित किया
रसिकप्रिया में राणा हम्मीर को वीर राजा की उपाधि।
⇒ सूड प्रबंध - संगीत के पूर्व आचार्यों का उल्लेख
⇒ कामराज रतिसार - कामशास्त्र विशारद होने का परिचायक
⇒ अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ - संगीत मीमांसा, संगीतक्रम दीपिका
नवीन गीत-गोविंद, वाद्य प्रबंध, संगीत सुधा
संगीत रत्नाकर टीका, चंडीशतक टीका, हरिवार्तिक

⇒ श्री सारंग व्यास - संगीताचार्य एवं संगीत गुरु
⇒ श्री कान्ह व्यास - सर्वश्रेष्ठ दरबारी कवि, एकलिंग महात्म्य के रचयिता
⇒ अत्रिभट्ट - कीर्तिस्तम्भ की रचना, पुत्र महेश ने पूर्ण किया।
⇒ प्रसाद मण्डन - देवालय निर्माण कला का विवरण ग्रन्थ में है।
⇒ रूप मंडन - मूर्तिकला विषयक ग्रन्थ,
⇒ देवतामूर्ति प्रकरण (रूपावतार मंडन) मूर्ति निर्माण, प्रतिमा स्थापना

By Pradeesh Kumawat

⇒ कुम्भाकालीन जैनाचार्य = सोमसुन्दर सुरि जयशेखर सूरि, भुवन कीर्ति सोमदेव प्रमुख थे।
⇒ राजवल्लभ मंडन, वास्तु मंडन, वास्तुसार कोदंड मंडन, शाकुन मंडन, वैद्य मंडन इत्यादि ग्रन्थ सुत्रधार एवं मंडन द्वारा रचित है।

⇒ मंडन के भाई नाथा ने वास्तुमंजरी और मंडन के पुत्र गोविन्द ने कलानिधि पुस्तकों की रचना की
⇒ सन् 1468 में कुम्भा की उसके पुत्र उदा ने हत्या कर दी, कटारगढ़ (कुंभलगढ़) में हत्या की।

कुम्भा व कुम्भकरण की उपाधियाँ ↓
① हालगुरु = गिरि दुर्ग का स्वामी होने के कारण
② राणो रासो = विद्वानो का आश्रयदाता होने के कारण
③ हिन्दु सुरताण = समकालीन मुस्लिम शासकों द्वारा प्रदत्त
④ अभिनव भरताचार्य = संगीत ज्ञान के कारण
⑤ राजगुरु = राजाओ को शिक्षा देने की क्षमता होने के कारण
⑥ तोडरमल = हयपति (अश्वपति) हस्तीश (गजपति) और नरेश (पैदल सेना का अधिपति) होने से कहलाए।
⑦ नाटकराज का कर्ता = नृत्य शास्त्र के ज्ञाता।
⑧ धीमान = बुद्धिमतापूर्वक निर्माणादि कार्य करने से
⑨ शैलगुरु = शस्त्र या भाला का उपयोग सिखाने से
⑩ नंदिकेश्वरावतर = नंदिकेश्वर के मत का अनुसरण करने से
⑪ स्थापत्य कला का जनक = स्थापत्य कला को बढ़ावा देने से।

⇒ कुम्भा की हत्या उसके पुत्र उदा द्वारा की गई लेकिन राजा कुम्भा का दूसरा पुत्र रायमल बना।
⇒ मेवाड़ का पितृहन्ता उदा को कहा जाता है।

By Aadarsh Kumawat

महाराणा सांगा (संग्रामसिंह) 1509-28 ई.

⇒ रायमल का पुत्र, जन्म : 12 अप्रैल 1482 में

⇒ 24 मई 1509 को महाराणा संग्राम सिंह का राज्याभिषेक

⇒ उस समय दिल्ली में लोदी वंश सुल्तान सिकंदर लोदी

= गुजरात में महमूद शाह बेगड़ा

= मालवा में नासिरुद्दीन खिलजी का शासन था।

⇒ मेवाड़ का सबसे प्रतापी शासक, हिन्दुपत कहलाए

⇒ राज्याभिषेक से पूर्व अजमेर के कर्मचन्द पंवार ने सांगा को उनके बड़े भाईयों से बचाकर रखा।

⇒ महाराणा सांगा और मालवा

→ 1511 में नासिरुद्दीन खिलजी की मृत्यु

→ महमूद खिलजी द्वितीय मालवा की गद्दी पर बैठा किन्तु उसके चाचा ने उसे हटाकर सिंहासन अधिकृत किया फरवरी 1518 को साहिब खां पर सुल्तान महमूद खलजी-II ने गुजरात सुल्तान मुजफ्फरशाह की मदद से मालवा पर आक्रमण करवाया और माण्डू दुर्ग हस्तगत करवाया

⇒ लेकिन मेदिनीराय (चन्देरी शासक) की अनुरोध पर राणा सांगा ने गागरोन दुर्ग पर आक्रमण कर दुर्ग को मेदिनीराय के अधिकार में सौंप दिया।

→ 1519 में

⇒ मेदिनीराय पर पुनः महमूद खिलजी ने आक्रमण किया पुनः राणा सांगा गागरोन पहुंचे और महमूद खिलजी को पकड़कर मानवीय व्यवहार करते हुए क्षमादान दे दिया।

⇒ महाराणा सांगा और गुजरात : ईडर में हस्तक्षेप

⇒ ईडर के राव भाण के पौत्रों रायमल और भारमल की आपसी लड़ाई में सांगा ने मदद की रायमल को ईडर का शासक बनाया, इस कारण सांगा की गुजरात सुल्तान मुजफ्फर शाह से लड़ाई, मुजफ्फर शाह का दूसरा पुत्र बहादुरशाह रूष्ट होकर मेवाड़ आ गया और सांगा से कई बार गुजरात को लुटवाया।

⇒ खातोली का युद्ध (दिल्ली सल्तनत व राणा सांगा)
- सुल्तान - सिकन्दर लोदी की मृत्यु के बाद इब्राहीम लोदी 22 नवम्बर, 1517 को दिल्ली सल्तनत पर आसीन
⇒ सांगा ने पूर्वी राजस्थान के क्षेत्रो को अपनी ओर मिला लिया
- इब्राहिम लोदी ने क्रुद्ध होकर मेवाड़ पर आक्रमण किया
- 1517 में हाडौती की सीमा पर खातोली का युद्ध हुआ जिसमे इब्राहिम लोदी की पराजय हुई।

बाड़ी का युद्ध (धौलपुर) 1519 में पुनः इब्राहिम लोदी ने मियां मरूकन के नेतृत्व में शाही सेना भेजी गई। लेकिन बाड़ी युद्ध में भी हार झेलनी पड़ी (लोदी पराजय)

⇒ राणा सांगा और बाबर
राणा सांगा के समय काबुल का शासक बाबर (मोहम्मद जहीरुद्दीन बाबर) जो तैमुर लंग के वंशज उमरशेख मिर्जा का पुत्र था।
→ बाबर ने 20 अप्रैल 1526 को पानीपत की लड़ाई में दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी को परास्त कर दिल्ली पर मुगल शासन की आधारशिला रखी।
→ बाबर ने राणा सांगा के अधिकार क्षेत्र में पड़ाव डालकर बयाना का दुर्ग अधिग्रहण कर लिया।

- बयाना युद्ध - 16 फरवरी 1527 को सांगा ने बाबर की सेना को हरा बयाना दुर्ग पर कब्जा।

⇒ खानवा का युद्ध - बयाना विजय के बाद सांगा ने सीकरी जाने का सीधा मार्ग छोड़कर मुसावर होकर सीकरी का मार्ग पकड़ा। वे मुसावर में लगभग एक माह ठहरे लेकिन बाबर को खानवा के मैदान में उपयुक्त स्थान पर पड़ाव डालने और उचित सैन्य संचालन का बल मिल गया।

⇒ खानवा का युद्ध (भरतपुर की रूपवास तह० मे)
17 मार्च 1527 ई० को दोनो सेनाओ की बीच भीषण
→ इस युद्ध में सांगा के झण्डे के नीचे सभी राजपूताने के राजा थे
→ युद्ध से पहले सांगा ने पाती पेरवन की राजपूत परम्परा को पुनर्जीवित करके सभी सरदारो व राजाओं को युद्ध में शामिल होने का निमंत्रण दिया।

⇒ मारवाड़ के राव गंगा एवं मालदेव
- आमेर राजा पृथ्वीराज, ईडर राजा भारमल
- वीरमदेव मेड़तिया, डूंगरपुर महारावल उदयसिंह
- देवलिया का रावत बाघसिंह, नरवद हाड़ा
- चन्देरी का मेदिनीराय, वीरसिंह देव
- बीकानेर के राव जैतसी के पुत्र कुंवर कल्याणमल
- झाला अज्जा इत्यादि कई राजपूत राजा।

⇒ सांगा अंतिम हिन्दू शासक जिसमें विदेशियो को भगाने हेतु सम्पूर्ण राजपूत शासक सम्मिलित
⇒ युद्ध में राणा सांगा को तीर लगने से मूर्छित
⇒ तब सांगा के हाथी पर राजचिन्हों के साथ झाला अज्जा को सवार किया, झाला अज्जा ने अपने प्राण दिए।
⇒ सांगा को राजपूत बसवा गांव (दौसा) ले आए।
⇒ बाबर की यहां पर विजय हुई, मुगल राज्य स्थायी बाबर भारत वर्ष का बादशाह बना।
= राणा सांगा की हार के मुख्य कारण:
① बयाना युद्ध के बाद तैयारी का समय बाबर ने ② तुलुगमा पद्धति का बाबर द्वारा प्रयोग, नवीन तोपो व बन्दूको का प्रयोग
⇒ इससे राजपूत सेना की बड़ी हानी हुई।
⇒ बाबर ने खानवा के युद्ध को जिहाद धर्म युद्ध का नाश दिया था,

By Harsh Kumawat

⇒ बाद में बाबर ने पुन आक्रमण हेतु 19 जनवरी 1528 को चन्देरी पहुंचा
⇒ चन्देरी की सहायता करने राणा सांगा ने भी चन्देरी की ओर प्रस्थान किया और कालपी से कुछ दूर इरिच गाव में डेरा डाला जहां उन्हे साथी राजपूतो (जो नये युद्ध विरोधी) ने विष दे दिया और कालपी नामक स्थान पर 30 जनवरी 1528 को राणा सांगा का स्वर्गवास हो गया, उनको मांडलगढ़ लाया गया जहां उनकी समाधि भी बनी हुई है।

⇒ महाराणा सांगा वीर, उदार, कुशल, बुद्धिमान और न्याय प्रिय शासक थे मेवाड़ ही नही सम्पूर्ण भारतवर्ष में सांगा का विशिष्ट स्थान रहा। इसलिए उन्हे अन्तिम भारतीय हिन्दू सम्राट कहा जाता है।

⇒ उनके शरीर पर 80 घाव लगे हुए थे जो दाह संस्कार के समय देखा गया जिस कारण इन्हे सैनिको का भग्नावशेष भी कहा जाता है।
⇒ राणा सांगा का स्मारक बसवा में बना हुआ है।
⇒ ध्यान रहे - महाराणा सांगा ने इब्राहिम लोदी के भाई महमूद लोदी व हसन खां मेवाती दो अफगानो को शरण दी।

Youtube- Rajasthan Classes

⇒ राणा भोजराज (भक्त कवि मीराबाई के पति) की सन् 1521 में मृत्यु हो गई।
⇒ सांगा की मृत्यु के बाद चित्तौड़ के स्वामी राणा रतनसिंह = 1531 में बून्दी राजा सूरजमल के साथ आपसी लड़ाई में महाराणा रतनसिंह की मृत्यु। सूरजमल भी मारा गया
⇒ रतनसिंह के बाद विक्रमादित्य 1531 में राजा बने।

विक्रमादित्य (1531-1535)

⇒ राज्याभिषेक 1531 में
⇒ गुजरात सुल्तान बहादुरशाह ने सन् 1533 में चित्तौड़ पर आक्रमण किया।
⇒ रानी कर्मवती ने बादशाह हुमायू से सहायता हेतु राखी भेजी, लेकिन सहायता नहीं।
⇒ कर्मवती ने सुल्तान से सन्धि की, 25 मार्च 1533 में लौटा
⇒ 1534 में फिर से आक्रमण, महाराणा विक्रमादित्य को तो उदयसिंह सहित बून्दी भेज दिया गया
⇒ रावत बाघसिंह पाडनपोल दरवाजे व राणा सज्जा, सिंहा हनुमानपोल के बाहर लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।
⇒ हाड़ी रानी कर्मवती ने जौहर किया।
⇒ सेनापति रूमीखां के नेतृत्व में बहादुरशाह की सेना विजय हुई, चित्तौड़ का दूसरा शाका कहलाता है।

⇒ लेकिन तुरन्त बाद हुमायू ने बहादुरशाह पर आक्रमण कर वहां से बहादुरशाह को भगा दिया
⇒ मेवाड़ के विक्रमादित्य पुनः मेवाड़ के शासक बने।
⇒ 1536 में बनवीर (दासी पुत्र) ने विक्रमादित्य का सोते हुए वध कर देता है, और उदयसिंह को भी मार देना चाहता था, लेकिन स्वामीभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चन्दन का बलिदान देकर उदयसिंह को बचा लिया, ~~मेवाड़~~

⇒ पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुंभलगढ़ चली गई
⇒ वहां के किलेदार आशा देवपुरा ने वहां जगह दी।
⇒ बनवीर राज्य (मेवाड़) पर शासन करने लगा।

उदय सिंह (1537-1572)

⇒ सन् 1537 में मेवाड़ का शासक (जोधपुर-मालदेव सहायता से
⇒ सर्वप्रथम बनवीर को मारा। कुंभलगढ़ में राज्याभिषेक
⇒ शेरशाह मारवाड़ विजय के बाद चित्तौड़ की ओर बढ़ा तो उदयसिंह ने कूटनीति से काम लिया किले की कुंजियां शेरशाह के पास भेज दी।
⇒ 1559 में उदयपुर नगर की स्थापना (धूनी नामक स्थान को)
⇒ 1559 में उदयसागर बनने लगा 1565 में पूर्ण
⇒ मेवाड़ के प्रथम शासक अफगान शेरशाह सूरी की अधीनता स्वीकार की
⇒ अकबर का आक्रमण = 23 अक्टूबर 1567 को चित्तौड़ किले पर आक्रमण किया,
- कारण: उदयसिंह ने मालवा के पदच्युत शासक राजबहादुर को अपने यहां शरण देना।
⇒ किले का भार राठौड़ जयमल और रावत पत्ता को सेनाध्यक्ष नियुक्त कर सौंपा गया।
⇒ उदयसिंह परिवार के साथ पहाड़ो में चले गए।
⇒ युद्ध में राठौड़ कल्ला व जयमल हनुमानपोल पर
⇒ रावत पत्ता रामपोल पर वीरगति को प्राप्त,
⇒ राजपूत स्त्रियों ने जौहर,
⇒ 25 फरवरी 1568 को अकबर का किले पर अधिकार
⇒ यह चित्तौड़ दुर्ग का तृतीय साका था।
⇒ जयमल मेड़तिया, व पत्ता सिसोदिया की वीरता पर मुग्ध होकर अकबर ने हाथियों पर चढ़ी पाषाण की मूर्तियां बनवाकर आगरा किले के द्वार पर खड़ी करवाई।
⇒ उदयसिंह का 1572 ई. को गोगुन्दा (उदयपुर) में देहान्त हो गया जहां उनकी छतरी भी बनी है।
⇒ उदयसिंह ने अपनी प्रिय रानी भटियाणी रानी के पुत्र जगमाल सिंह को युवराज नियुक्त किया था।

महाराणा प्रताप = वीर शिरोमणि

⇒ मेवाड़ के तीन महाराणा - उदयसिंह, प्रतापसिंह और महाराणा अमरसिंह अकबर के समकालीन थे।
→ तीनो ने अपने गौरव और राज्य की स्वाधीनता के
⇒ लिए अकबर से संघर्ष किया।
= लेकिन फिर भी एक ने भी अपनी अधीनता स्वीकार न की

⇒ महाराणा प्रताप का जन्म : 9 मई 1540 ई. कुंभलगढ़ में, महाराणा उदयसिंह की रानी जयवन्ता बाई (पाली के सोनगरा अखैराज की पुत्री) की कोख से जन्म। (वि.स. ज्येष्ठ शुक्ला-3 1597)

⇒ महाराणा उदयसिंह ने जगमाल को अपराधिकारी बनाया जगमाल (उदयसिंह की रानी धीरबाई से उत्पन्न पुत्र)
→ महाराणा उदयसिंह का देहावसान 28 फरवरी 1572 को
⇒ जगमाल को राजगद्दी पर बैठा दिया गया लेकिन जालौर के अखयराज, ग्वालियर के रामसिंह और सरदारों की सहमति से गोगुंदा मे महाराणा प्रताप को राज्यसिंहासन पर बैठाया गया।

⇒ जगमाल को हय दिया और कहा जाता है कि जगमाल रुष्ट होकर अकबर के पास चला जाता है।
→ प्रताप सिंहासन पर बैठे उस समय उनकी आयु 32 वर्ष थी, राणा प्रताप 'कीका' नाम से लोकप्रिय हुए।
→ प्रताप का राज्याभिषेक समारोह कुंभलगढ़ में मनाया।
→ समारोह में राव चन्द्रसेन (जोधपुर) शामिल थे।

→ अकबर भारत का महानतम विजेता व साम्राज्य निर्माता था, मेवाड़ ने अकबर की साम, दाम, दण्ड, भेद सभी नीतियो को पैरो तले रौंद कर अपने स्वाधीनता की रक्षा की।

By Aadarsh Kumawat

⇒ अजबदे पंवार से विवाह (बिजौलिया ठिकाने से)
→ महाराणा प्रताप ने जैसलमेर की छीरबाई से विवाह
इन्होंने 17 और भी विवाह किए थे।

⇒ राज्याभिषेक के समय तलवार कृष्णदास ने बांधी
→ सिसोदिया वंश में महाराणा प्रताप को युवराज खिताब दिया
= एवं मेवाड़ का 54 वाँ शासक नियुक्त।
→ इन्हें कीका और पातल कहा जाता था।

* अकबर द्वारा समझौता करने के प्रयत्न एवं शिष्टमंडल
① - जलाल खान कोरची - नवम्बर 1572
② कुंवर मानसिंह - जून 1573
③ राजा भगवन्तदास - सितम्बर 1573
④ राजा टोडरमल - दिसम्बर 1573
प्रताप से संधि हेतु इन शिष्टमंडल को भेजा गया।
लेकिन प्रताप ने अपनी स्वाधीनता को बनाए रखा।

↓ हल्दीघाटी का युद्ध ↓ 21 जून 1576
→ सम्राट अकबर ने कुंवर मानसिंह (आमेर) के नेतृत्व में शाही सेना को महाराणा प्रताप पर आक्रमण करने हेतु 3 अप्रैल 1576 को अजमेर से रवाना किया।
— मानसिंह ने मांडलगढ़ में डेरा डाला।
→ मानसिंह का पहला युद्ध जिसमें वो सेनापति था।

→ समाचार सुनते ही महाराणा प्रताप सेना सहित कुंभलगढ़ से गोगुन्दा आ गए. मानसिंह की सेना भी गोगुंदा की ओर बढ़ी,
— महाराणा प्रताप गोगुन्दा से लोंचिग गांव पहुंचे (खमनौर से 10 मील दूर)
= हल्दीघाटी ⇒ राजसमंद के नाथद्वारा से 11 मील दक्षिण पश्चिम में गोगुन्दा और खमनौर के बीच एक संकरा स्थान है, यहां की मिट्टी के हल्दी के समान पीली होने के कारण नाम हल्दीघाटी पड़ा।

⇒ हल्दी घाटी के मैदान में (रक्त तलाई) में 21 जून 1576 (वि.स. 1633) को हल्दीघाटी का भीषण युद्ध हुआ।

⇒ युद्ध में शामिल : ग्वालियर के रामसिंह व उसके पुत्र, शालिवाहन, भामाशाह व उसका भाई ताराचन्द, झाला मानसिंह, झालाबीदा सोनगरा मानसिंह, प्रमुख व्यक्ति शामिल थे।

⇒ प्रताप की सेना में सबसे आगे का भाग हकीम खान सूर पठान के हाथ में था।

⇒ अन्तिम पंक्ति का संचालन - आसफ खां, जगन्नाथ कच्छवाहा

⇒ शाही सेना के साथ प्रसिद्ध इतिहासकार अलबदायूनी भी था।

⇒ इस युद्ध में महाराणा प्रताप घायल हो जाते है। युद्ध छोड़ने को तैयार नही होने पर झाला बीदा ने प्रताप का स्थान लिया, प्रताप के स्वामी भक्त सामंत व सैनिक प्रताप को सुरक्षित स्थान ले गए।

⇒ जब प्रताप मैदान से जा रहे थे तब दो मुगल-सैनिको ने पीछा किया, प्रताप का भाई शक्तिसिंह जो उस समय मुगल सेना के साथ था शक्तिसिंह ने उस दोनो सैनिको को मार डाला।

⇒ दोनो भाई बलीचा गांव के पास एक नाले के किनारे मिले, जो चेतक द्वारा कूदा गया था।

⇒ यहां चेतक ने आखिरी सांस ली

⇒ वही चेतक (चेटक) का चबूतरा बना हुआ है।

⇒ प्रताप के हाथी का नाम - रामप्रसाद था
प्रताप के रामप्रसाद हाथी ने अकबर के 13 हाथियो को मार गिराया था, जब ये हाथी अकबर की पकड़ में आया तब इसका नाम पीरप्रसाद रखा था।

By Aadarsh Kumawat

⇒ मुगल सैनिको ने प्रताप समझकर (झाला बीदा को) मार गिराया एवं मेवाड़ी सेना की हिम्मत टूट गई और यह युद्ध दोपहर में मुगलो की जीत के साथ समाप्त।
⇒ कुंवर मानसिंह अगले ही दिन गोगुंदा चला गया
⇒ मुगलो का लक्ष्य प्रताप था, न पकड़ सके न मारे जा सके

⇒ प्रताप युद्ध के बाद इलाज हेतु कोल्यारी गांव पहुंचे कोल्यारी से वापिस कुंभलगढ़ आए।
- फिर से अपने सैन्य संगठन को सुदृढ़ करना शुरू किया
- उन्होने अपनी सैनिक नीति के तहत गुरिल्ला (छापामार) युद्ध पद्धति अपनाई।
⇒ धीरे-2 उन्होने सारा प्रदेश फिर से मुगल सेना से छीन लिया अकबर की महत्वकांक्षा पूरी नही हुई।
⇒ प्रताप ने फिर से गोगुन्दा पर अपना अधिकार स्थापित।

⇒ अक्टूबर 1576 में अकबर ने स्वयं ही अजमेर से मेवाड़ पर चढ़ाई की उसने नवम्बर 1576 में उदयपुर जीता उसका नाम मुहम्मदाबाद रखा।

(शाहबाज खां को मेवाड़ पर तीन बार भेजा गया।
⇒ प्रथम बार: 15 अक्टूबर 1577 को शाही सेना को दुर्ग कुम्भलगढ़ आक्रमण हेतु रवाना किया। जो चितौड़ के बाद राज्य की राजधानी हो गया था।
- शाही सेना ने कुंभलगढ़ पर अधिकार किया परन्तु महाराणा प्रताप को नही पकड़ सकी।

भामाशाह की भेंट = महाराणा प्रताप कुंभलगढ़ से निकलकर (राणपुर) रणकपुर पहुंचे, आगे चूलिया ग्राम में भामाशाह ने उन्हे काफी धन भेंट कर सहायता की।
⇒ भामाशाह का जन्म ओसवाल परिवार में 1547 में हुआ।
⇒ प्रताप ने महासहनी रामा के स्थान पर भामाशाह को प्रधान बनाया।

⇒ शाहबाज खां द्वितीय बार - 15 दिसम्बर, 1578
⇒ तृतीय बार : 15 नवम्बर 1579 को
⇒ शाहबाज खान महाराणा प्रताप पर अधिकार करने के लिए भेजा गया, लेकिन वह असफल रहा।

⇒ दिवेर का युद्ध - (अक्टूबर, 1582)
महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की भूमि को मुक्त कराने का अभियान दिवेर से प्रारम्भ किया।
- अकबर के काका सुल्तान खां पर अक्टूबर 1582 पर आक्रमण किया।
- महाराणा प्रताप को यश और विजय प्राप्त हुई।
- दिवेर युद्ध के बाद चावण्ड में अपना निवास स्थान बनाया,
→ कर्नल जेम्स टॉड ने इस युद्ध को मैराथन का युद्ध कहा

⇒ अकबर ने आमेर के राजा भारमल के छोटे पुत्र जगन्नाथ कच्छवाहा, के नेतृत्व में 5 दिसम्बर, 1584 को एक विशाल सेना मेवाड़ के विरुद्ध भेजी पर वह भी प्रताप को नहीं पकड़ सका।

⇒ चावण्ड नई राजधानी : 1585 में चावण्ड को आपातकालीन राजधानी स्थापित की,
प्रताप के अन्तिम 12 वर्ष और उनके उत्तराधिकारी महाराणा अमरसिंह के राजकाल के प्रारम्भिक 16 वर्ष चावण्ड में,
- चावण्ड कुल 28 वर्ष तक मेवाड़ की राजधानी रहा।
- चावण्ड गांव से लगभग आधा मील दूर एक पहाड़ी पर प्रताप ने महल बनवाए।

⇒ 19 जनवरी 1597 को प्रताप का चावण्ड में देहान्त।
⇒ बांडोली में प्रताप का अग्नि संस्कार
⇒ जहां उनकी छतरी भी बनी हुई है।

By Aadarsh kumawat

- कर्नल जेम्स टॉड ने हल्दीघाटी को मेवाड़ की थर्मोपॉली
- दिवेर को मेवाड़ का मेराथन
- अबुल फजल ने हल्दीघाटी के युद्ध को खमनोर का युद्ध।
- अलबदायूनी ने गोगुन्दा का युद्ध कहा।

⇒ हल्दीघाटी के युद्ध में हकीम खां सूर एवं चिंगकला के क्षेत्र में नसीरुद्दीन (नसीरदी) को महत्व प्रदान करना प्रताप की धर्मनिरपेक्षता को सिद्ध करते है।

⇒ मेवाड़ के रक्षक के रूप में जाने जाते है।
⇒ मेवाड़ के उद्धारक भी इन्हे कहा जाता है।
⇒ प्रताप को मेवाड़ केसरी भी कहा जाता है।
⇒ हल्दीघाटी का शेर प्रताप को कहा जाता है।

youtube- Rajasthan classes

By Aadarsh Kumawat

महाराणा अमरसिंह - प्रथम
(1597 - 1620 ई०)

जन्म : 16 मार्च 1559 को हुआ
राज्याभिषेक : 19 जनवरी 1597 को चावण्ड में
पिता - महाराणा प्रताप माता -

= बादशाह जहांगीर महाराणा को अधीन करने हेतु 8 नवम्बर 1613 को अजमेर पहुंचा
— शाहजादा खुर्रम को सेना देकर मेवाड़ भेजा।

→ अन्त: में सभी सरदारों व युवराज कर्णसिंह के निवेदन पर महाराणा अमरसिंह ने 5 फरवरी 1615 को निम्न शर्तों पर शाहजादा खुर्रम से सन्धि करली -

① महाराणा बादशाह के दरबार में कभी उपस्थित नहीं होगा
② महाराणा का ज्येष्ठ युवराज शाही दरबार में उपस्थित होगा
③ शाही सेना में महाराणा 1000 सवार रखेगा
④ चित्तौड़ के किले की मरम्मत न करवाई जाएगी

= लगभग 1050 वर्ष बाद मेवाड़ की स्वतंत्रता का अन्त हुआ 19 फरवरी 1615 को कुंवर कर्णसिंह को लेकर शाहजादा खुर्रम बादशाह के दरबार में अजमेर पहुंचा।

⇒ बादशाह ने मेवाड़ के राणा को आपस के समझौते से अधीन किया था न कि बल से, → कर्नल टॉड ने कहा।

- अमरसिंह का देहावसान - 26 जनवरी 1620 को उदयपुर में, अन्त्येष्टि - आहड़ में गंगोद्भव के निकट

→ आहड़ की महासतियों में सबसे पहली छतरी महाराणा अमरसिंह की है।

महाराणा कर्णसिंह -[1620 - 1628]

- जन्म : 7 जनवरी 1584
- राज्याभिषेक - 26 जनवरी 1620 को हुआ
- 1622 में शाहजादा खुर्रम ने पिता जहांगीर से विद्रोह किया
- उस समय शाहजादा खुर्रम उदयपुर में महाराणा के पास आया
- माना जाता है कि वह पहले कुछ दिन देलवाड़ा की हवेली मे ठहरा. फिर जगमन्दिर में (पिछोला झील मे स्थित)

→ ध्यान रहे- इसी महल को देखकर शाहजहां ने ताजमहल बनवाया था।

→ जगमन्दिर, महाराणा कर्णसिंह ने बनवाने शुरु किया। जिसे उनके पुत्र महाराणा जगतसिंह ने पूर्ण करवाया इसलिए ये महल जगमन्दिर कहलाते है।

→ पहले मेवाड़ शासक, मुगल दरबार में एक हजार की मनसबदारी दी गई

→ मार्च 1628 में कर्णसिंह का देहान्त हो गया।

→ बादशाह जहांगीर का देहान्त - 28 अक्टूबर 1627 ई.

महाराणा जगतसिंह प्रथम = 1628 - 1652

जगतसिंह प्रथम का राज्याभिषेक - 28 अप्रैल 1628 को

- मई 1652 में जगन्नाथ राय (जगदीश) का भव्य विष्णु का पंचायतन मन्दिर बनवाया

→ यह मन्दिर अर्जुन की देखरेख और सुत्रधार भाणा व उसके मुकुन्द की अध्यक्षता में बनाया गया

→ मन्दिर प्रतिष्ठा - 13 मई 1652 को हुई,

→ मन्दिर की विशाल प्रशस्ति जगन्नाथ राय प्रशस्ति की रचना कृष्णभट्ट ने

→ मन्दिर के पास धाय का मन्दिर महाराणा की धाय नौजुबाई ने बनवाया

→ महाराणा जगतसिंह के समय ही प्रतापगढ़ की जागीर मुगल बादशाह शाहजहां द्वारा मेवाड़ से स्वतंत्र करा दी गई।

→ इनका देहावसान 1652 ई. में उदयपुर में हुआ।

By Aadarsh Kumawat

महाराणा राजसिंह - (1652-1680)

→ जगतसिंह प्रथम के पुत्र राजसिंह -

- राज्याभिषेक - 10 अक्टूबर 1652 को हुआ।
- महाराणा राजसिंह ने महाराणा जगतसिंह द्वारा प्रारम्भ की गई चितौड़ के किले की मरम्मत का कार्य जारी रखा।

- बादशाह औरंगजेब के 2 अप्रैल 1679 को हिन्दुओं पर जजिया लगाने, मूर्तियां तुड़वाने आदि अत्याचारों का प्रबल विरोध किया।

⇒ बादशाह के साथ सम्बध तय की गई चारुमति (किशनगढ़ के राजा रूपसिंह की पुत्री) से उसकी इच्छानुसार उसके धर्म रक्षा के लिए औरंगजेब के विरुद्ध जाकर निडरता से सन - 1660 में विवाह किया।

- जोधपुर के अजीतसिंह को अपने यहां आश्रय दिया व जजिया कर देना स्वीकार न किया।

→ बादशाह के डर से श्रीनाथ जी आदि की मूर्तियों को लेकर भागे गोसाई लोगो को आश्रय दिया।

→ कांकरोली में द्वारकाधीश की मूर्ति व सिहाड़ (नाथद्वारा) में 1672 ई. में श्रीनाथ जी (विट्ठलनाथ) जी की मूर्ति प्रतिष्ठित कराकर धर्मनिष्ठा का परिचय दिया।

→ कई बार औरंगजेब से लड़ाईयां हुई व औरंगजेब की सेना परास्त हुई।

→ किसी के द्वारा विष दिए जाने पर इनकी मृत्यु।

→ यदि बीच में देहान्त न होता तो मारवाड़ के साथ मिलकर औरंगजेब व मुगल शासन का अन्त हो जाता।

→ अम्बा माता का मन्दिर (उदयपुर) - 1664 में
→ द्वारकाधिश का मन्दिर (कांकरोली) 1664 में
→ बड़ी का जानासागर तालाब (उदयपुर)
→ राजसमद झील (राजसमंद) गोमती नदी पानी को रोककर
↳ जनवरी 1662 को इसकी नींव की खुदाई प्रारम्भ
1676 में प्रतिष्ठा, गोमती, ताल, केलवा नदियों का पानी आने लगा।
→ राजसमंद झील के पास राजनगर कस्बा आबाद करवाया।

→ इस झील की नौचौकी पाल पर ताकों में 25 बड़ी-2 शिलाओ पर 25 सर्गो का राज प्रशस्ति महाकाव्य खुदा हुआ है
- जो सम्पूर्ण भारत का सबसे बड़ा शिलालेख व शिलाओ में खुदे हुए ग्रन्थों में सबसे बड़ा है।
→ राजसिंह प्रशस्ति की रचना रणछोड़भट्ट तेलंग ने की

→ राजसिंह को विजयकटकातु की उपाधि दी गई है।
→ ध्यान रहे: चूंडावत मांगे सैनानी, सर काट दे दियो क्षत्राणी
पंक्ति हाड़ी रानी सहल कंवर के लिए प्रसिद्ध है। क्योंकि इसने अपना सिर काटकर अपने पति रतनसिंह के पास भेजा था। रतनसिंह, राजसिंह की सलूम्बर जागीर के सामंत थे।

महाराणा जयसिंह - [1680-1698] तक
→ महाराणा राजसिंह के बाद उनके पुत्र जयसिंह का राज्याभिषेक कुरज गांव में हुआ,
देबर नामक नाके पर सेगमरमर की जयसमंद झील का निर्माण शुरु किया जो 1691 में बनकर तैयार हुई। देबर झील भी कहते हैं
→ शुरुआत 1687 में गोमती नदी, झामरी, रूपारेल व बगार नामक नदियों के पानी को रोककर झील बनाना शुरु किया।
→ झील के अन्दर दो बड़े टापू - बाबा का मगरा व पाइरी जहां मीणा लोग रहते हैं।

(महाराणा अमरसिंह द्वितीय - 1698-1710)

→ महाराणा जयसिंह के पुत्र
→ जोधपुर को मुगलों से मुक्त कराकर अजीतसिंह को शासक बनाने में सहायता की।
→ इसी प्रकार आमेर को सवाई जयसिंह के अधिकार में लिया।
→ साथ ही मेवाड़ मारवाड़, आमेर में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित
→ इन्होने अपनी पुत्री का विवाह जयपुर महाराजा सवाई जयसिंह से।
→ इन्होने बागड़ व प्रतापगढ़ को पुनः अपने अधीन लिया,

→ संग्राम सिंह द्वितीय ← (1710 से 1734)
→ अमरसिंह द्वितीय के पुत्र संग्रामसिंह द्वितीय
→ इनके द्वारा सहेलियों की बाड़ी उदयपुर
→ सीसारमा गांव में वैद्यनाथ का विशाल मन्दिर बनवाए
→ वैद्यनाथ मन्दिर की प्रशस्ति भी लिखवाई
→ 1734 में इनका देहान्त हो गया।

→ जगतसिंह द्वितीय
→ संग्राम सिंह द्वितीय के पुत्र, 1734 में शासक बने
→ उस समय अफगान बादशाह नादिरशाह ने दिल्ली पर आक्रमण करके दिल्ली को लूटा,
→ मराठों ने इन्ही के शासन काल में मेवाड़ में पहली बार प्रवेश कर इनसे कर वसूल किया।
- जगतसिंह द्वितीय ने जगतनिवास महल बनाया (पिछोला में)
- इनके दरबारी कवि नेकराम ने जगतविलास ग्रन्थ लिखा।
→ हुरडा सम्मेलन = मराठों के विरुद्ध में राजाओं को संगठित करने के उद्देश्य से 17 जुलाई 1734 को हुरडा नामक स्थान पर सम्मेलन, लेकिन अन्त में निजी स्वार्थों से असफल

→ महाराणा भीमसिंह ←
= कृष्णाकुमारी विवाद = 1778 ई. में भीमसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे, लड़की कृष्णा कुमारी को लेकर जयपुर व —

By Aadarsh Rathawat

→ जोधपुर में संघर्ष हुआ।
- भीमसिंह ने अपनी पुत्री का रिश्ता जोधपुर नरेश भीमसिंह से तय किया था परन्तु विवाह से पूर्व ही जोधपुर नरेश की मृत्यु हो जाने पर उन्होंने कृष्णा कुमारी का रिश्ता जयपुर नरेश जगतसिंह द्वितीय से तय कर दिया।
→ इस पर मारवाड़ के शासक मानसिंह ने एतराज किया
→ कि उसका रिश्ता जोधपुर तय हुआ तो विवाह भी उन्हीं से (मानसिंह) से ही होना चाहिए।

→ जयपुर ने अमीर खां पिंडारी की सहायता से मार्च-1807 में गिंगोली नामक स्थान पर जोधपुर की सेना को युद्ध में हराया
→ अन्ततः अमीर खां पिंडारी व अजीतसिंह चूंडावत की सलाह पर 21 जुलाई 1810 ई. को कृष्णा कुमारी को जहर देकर विवाद को समाप्त किया।
→ 1818 ई. में महाराणा भीमसिंह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से अधीनस्थ सहयोग संधि कर ली।
→ मेवाड़ भी विदेशी शक्ति की दासता का शिकार हो गया।

= अन्य सिसोदिया राज्य =
प्रतापगढ़, डूंगरपुर, शाहपुरा एवं बांसवाड़ा → रियासतें।
→ मेवाड़ के गुहिल शासक सामंतसिंह ने 1177 ई. में जालौर के शासक कीर्तिपाल (कित्तू) से हारने के बाद वागड़ में 1178 ई. को परमारों को हराकर गुहिल वंश स्थापित
→ इनके वंशज डूंगरसिंह ने 1358 में डूंगरपुर बसाया
→ 1527 ई. में वागड़ के शासक महारावल उदयसिंह खानवा के युद्ध में राणा सांगा की ओर से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त हुए
→ महारावल उदयसिंह के दो पुत्रों को बटवारे दिए गए थे।
① बड़े पुत्र पृथ्वीराज ने डूंगरपुर को संभाला।
② छोटे जगमाल ने बांसवाड़ा का शासन सम्भाला।

By Aadarsh Kumawat

⇒ डूंगरपुर राज्य = 1527 के बाद पृथ्वीराज -
→ 1573 ई. में अकबर ने आक्रमण कर इसे जीता -
→ 1577 में महारावल आसकरण ने अकबर की अधीनता -
→ आसकरण की पत्नि प्रेमलदेवी ने डूंगरपुर में सन 1586 में भव्य नौलखा बावड़ी का निर्माण -
→ यहाँ के शासक महारावल जसवंतसिंह द्वितीय ने ईस्ट इण्डिया क. से संधि की
→ सन 1845 में इनके शासन प्रबंध से असंतुष्ट होकर अंग्रेज सरकार ने इन्हे अपदस्थ कर वृंदावन भेजा था।

⇒ बांसवाड़ा राज्य = 1527 के बाद माही नदी के दक्षिण का हिस्सा जगमाल को सौंपा गया।
→ बांसवाड़ा में मे भीलेश्वर महादेव मन्दिर फूलमहल एवं बाई का तालाब बनवाया।
→ वंशज उम्मेदसिंह ने 1818 ई. में अंग्रेजो से सन्धि।

→ प्रतापगढ़ राज्य → (देवलिया)
सूर्यवंशी क्षत्रिय जो सिसोदिया शाखा से है। शासक महारावत कहलाए.
→ महाराणा कुम्भा से रुष्ट होकर उनके भाई क्षेमसिंह ने चित्तौड़ का परित्याग कर 1437 में सादड़ी पर अधिकार
- क्षेमकर्ण के बाद महारावत सूरजमल ने 1508 में देवलिया (देवगढ़) बसाया. →
- इसके उत्तराधिकारी पुत्र महारावत बाघसिंह ने 1534 ई. चित्तौड़ पर मालवा (मांडू) सुल्तान बहादुर शाह द्वारा आक्रमण करने पर चित्तौड़ के दुर्ग की वीरतापूर्वक रक्षा करते हुए प्राण न्यौछावर कर दिए।
- इनकी छतरी चित्तौड़ के पहले प्रवेश द्वार पर
⇒ प्रतापसिंह 1673 में देवलिया का शासक, समकालीन मेवाड़ शासक राजसिंह, प्रतापसिंह ने 1699 के लगभग डोडेरिया खेड़ा स्थान पर प्रतापगढ़ कस्बा बसाया।

By Aadarsh Rawat

प्रतापगढ़ 1818 में

→ प्रतापसिंह ने देवलिया में प्रतापराव नामक बावड़ी और बाग बनाया।
→ देवलिया में गोपालसिंह ने गोपालमहल (1731) बनवाए।
→ सालिम सिंह 1756 ने दिल्ली बादशाह शाह आलम के दरबार में हाजिर होकर प्रतापगढ़ में टकसाल खोलकर सालिमशाही सिक्के ढालने की आज्ञा ली।
→ 1761 में मराठा सेनापति मल्हार राव होलकर ने प्रतापगढ़ पर आक्रमण किया लेकिन वह असफल रहा।
→ 5 अक्टूबर 1818 को इनके पुत्र सामंत सिंह ने अंग्रेजो से सन्धि कर ली।

→ दलपतसिंह (महारावल जसवंतसिंह का दत्तक पुत्र) जिसने अंग्रेजो की सहायता से देवलिया में रहते हुए दोनो राज्यो का शासन कार्य देखने लगा था।
- 1857 क्रान्ति में दलपतसिंह ने अंग्रेजो की सहायार्थ अपनी सेना नीमच छावनी भेजी थी।
→ महारावल उदयसिंह ने प्रतापगढ़ दुर्ग में उदयविलास महल बनवाए
→ 25 मार्च 1948 को प्रतापगढ़ रियासत का राजस्थान संघ में विलय हो गया।

- शाहपुरा राज्य : महाराणा अमरसिंह-प्रथम के पौत्र सुजानसिंह ने 1631 में की।
प्रारम्भ में इसका शासन मेवाड़ व मुगलों के नियंत्रण में रहा। 18 वीं सदी के बाद यहाँ के शासको ने अंग्रेजो से सन्धि कर ली।

By Rajesh Kumawat

चौहान वंश का इतिहास

- शाकम्भरी एवं अजमेर के चौहान =
  - ⇒ चौहानों की उत्पति के सम्बंध में मत =
  - ⇒ पृथ्वीराज रासो में चौहानो को अग्निकुण्ड से उत्पन्न बताया है।
- → प० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा चौहानों को सूर्यवंशी मानते है, पृथ्वीराज विजय, हम्मीर महाकाव्य एवं सुर्जन चरित में भी इन्हे सूर्यवंशी माना है।
- → कर्नल जेम्स टॉड ने चौहानो (मध्य एशियाई) विदेशी बताया।
- → डॉ. दशरथ शर्मा बिजोलिया लेख के आधार पर चौहानो को ब्राह्मण वंशी मानते है।

- → 1177 ई. ; का हांसी शिलालेख एवं माउण्ट आबू के चन्द्रवती के चौहानो का अचलेश्वर मन्दिर का लेख चौहानो को चन्द्रवंशी बताता है।
- → माना जाता है कि इनका मूल स्थान शाकम्भरी साम्भर के आसपास सपादलक्ष माना जाता है। इनकी राजधानी अहिछत्रपुर (नागौर) थी।
- → सांभर झील का निर्माण वासुदेव द्वारा करवाया गया।

वासुदेव चौहान

- → चौहानो का मूल स्थान जांगलप्रदेश में साम्भर के आसपास सपादलक्ष क्षेत्र को माना जाता है।
- — इनकी प्रारम्भिक राजधानी अहिछत्रपुर (नागौर) थी।
- → बिजोलिया शिलालेख के अनुसार सपादलक्ष के चौहान वंश का संस्थापक वासुदेव चौहान नामक शासक जिसने 551 ई. के आसपास वंश का शासन प्रारम्भ किया।
- → साम्भर झील का निर्माण वासुदेव चौहान ने करवाया।

- → अजयपाल = 7 वीं सदी में साम्भर कस्बा बसाया तथा अजयमेरु दुर्ग की स्थापना की

By Aadarsh Kumawat

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh kumawat

Pdf को अपने मित्रो के साथ शेयर जरुर करें

⇒ अजयराज ⇒ चौहान वंश का दूसरा प्रतापी शासक
→ यह पृथ्वीराज प्रथम का पुत्र था
→ 1113 के लगभग अजयमेरु (अजमेर) बसाकर अपने राज्य की राजधानी बनाया
→ श्री अजयदेव नाम से चांदी के सिक्के चलाएं
- रानी सोमलेखा ने भी अपने नाम के सिक्के चलाएं
→ अन्हिलपाटन के चालुक्य शासक मूलराज को हराया।
→ तारागढ़ दुर्ग अजमेर नगर में बनवाया।
- दिगम्बरो व श्वेताम्बरों के मध्य शास्त्रार्थ की अध्यक्षता की।

⇒ अर्णोराज - अजयराज के बाद 1133 में अर्णोराज शासक
→ अर्णोराज ने तुर्क आक्रमणकारियों को बुरी तरह हराया।
→ अजमेर में आनासागर झील का निर्माण।
→ इन्होने चौलुक्य जयसिंह की पुत्री कांचनदेवी से विवाह किया
→ पुष्कर में वराह मन्दिर का निर्माण
→ अर्णोराज शैव मतावलम्बी होते हुए भी धर्मो के प्रति सहिष्णु-
→ चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध मे इन्हे हराया, वर्णन- प्रबंध चिंतामणि, व प्रबंधकोष में -

⇒ विग्रहराज चतुर्थ / बीसलदेव / कवि बांधव [1153-1163]
→ शाकम्भरी व अजमेर का महान चौहान शासक
- गजनी शासक अमीर खुसरुशाह (हम्मीर) को हराया।
→ दिल्ली के तोमर शासक को पराजित किया और दिल्लिका (दिल्ली) को अपने अधीन लिया और उसे सामंत बनाया।
→ अच्छे योद्धा, सेनानायक व विद्वानों के आश्रयदाता।
→ संस्कृत भाषा में हरिकेली नाटक की रचना की
→ हरिकेली नाटक में अर्जुन व शिव के मध्य युद्ध का वर्णन
→ इन्होने बीसलपुर नामक कस्बे व झील का निर्माण।
→ एकादशी के दिन पशु वध पर प्रतिबंध लगाया।
→ इनका शासनकाल सपादलक्ष का स्वर्णयुग माना जाता है।

By Aadarsh Kumawat

→ दरबारी कवि सोमदेव जैसे प्रकाण्ड कवि
जिसने ललित विग्रहराज नाटक की रचना की।
→ संस्कृत पाठशाला बनवाई
(ढाई दिन झोंपड़े की सीढ़ीयो में मिले दो पाषाण अभिलेखानुसार)
→ इसे मुहम्मद गौरी के सेनापति कुतुबद्दीन ऐबक
ने अढ़ाई दिन के झोपड़े में परिवर्तित कर दिया था।

→ पृथ्वीराज तृतीय ←
→ चौहान वंश के अन्तिम प्रतापी सम्राट पृथ्वीराज
तृतीय का जन्म 1166 ई. में (वि.स. 1223) में
— शासक - सोमेश्वर की रानी कर्पूरीदेवी
(दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर की पुत्री) की
कोख से अन्हिलपाटन (गुजरात) में हुआ।

→ सोमेश्वर के देहान्त के बाद 11 वर्ष की आयु में
पृथ्वीराज तृतीय अजमेर की गद्दी पर बैठे।
→ सुयोग्य प्रधानमंत्री - कदम्बदास (कैमास)
→ माता कर्पूरीदेवी द्वारा शासन-कार्य संभाला गया।
→ बहुत कम समय पृथ्वीराज ने कार्य-भार संभाला

→ पृथ्वीराज तृतीय की विजय व युद्ध जानकारी।
* नागार्जुन एवं भडानको का दमन =
→ पृथ्वीराज तृतीय के राजकाज सम्भालने के कुछ
बाद उसके चचेरे भाई नागार्जुन ने विद्रोह
कर दिया, कैमास की सहायता से उसे नागार्जुन को
पराजित किया, गुडापुरा (गुड़गांव) क्षेत्र अधिकार में लिया।

* भरतपुर-मथुरा क्षेत्र में 1182 में भडानको
के विद्रोह का कुशलतापूर्वक अन्त किया।

* महोबा के चन्देलो पर विजय - 1182 ई. में चन्देल शासक परमाल देव को हराकर संधि हेतु विवश किया।

* चालुक्यों पर विजय: सन् 1184 के आसपास गुजरात चालुक्य शासक भीमदेव - द्वितीय के प्रधानमंत्री जगदेव प्रतिहार एवं पृथ्वीराज की सेना के मध्य नागौर का युद्ध हुआ, दोनो में सन्धि हुई, शत्रुता का अंत।

* कन्नौज से सम्बध: समकालीन कन्नौज शासक जयचन्द गहडवाल था।
→ दोनो में साम्राज्य विस्तार को लेकर वैमनस्य था।
→ जयचंद की पुत्री संयोगिता को पृथ्वीराज द्वारा स्वयंवर से उठाकर ले जाने दोनो में शत्रुता अधिक बढ गई।
→ इसी कारण तराइन युद्ध में जयचंद ने मुहम्मद गौरी का साथ दिया।

। पृथ्वीराज तृतीय एवं मुहम्मद गौरी।

* भारत के उत्तर-पश्चिम में गौर-प्रदेश पर शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी का शासन था, साथ ही पंजाब, मुल्तान, सिंध पर भी
* मुहम्मद गौरी की 1191 में पृथ्वीराज चौहान से भिडंत होती है।

* तराइन का प्रथम युद्ध (1191) ई.
→ पृथ्वीराज तृतीय का आधिपत्य - दिल्ली हांसी, सरस्वती एवं सरहिंद के दुर्गो को जीतकर अपने अधिकार में करने के बाद 1190-91 में गौरी ने सरहिंद (तबरहिंद) पर अधिकार कर अपनी सेना वहां रख दी।
→ आक्रान्ताओ को भगाने हेतु पृथ्वीराज सरहिन्द की ओर बढ़ा।
→ गौरी भी विशाल सेना के साथ बढ़ा।
→ तराइन के मैदान (हरियाणा के करनाल एवं थानेश्वर के मध्य तराइन) (तरावड़ी) के मैदान में दोनो सेनाओं के मध्य 1191 ई. में तराइन का प्रथम युद्ध हुआ।
→ दिल्ली के गवर्नर गोविन्दराज ने मुहम्मदगौरी को घायल कर दिया।

By Ajeet Kumawat

→ घायल मुहम्मद गौरी युद्ध भूमि से बाहर निकल गया।
→ कुछ समय में गौरी समस्त सेना भी भाग गई।
→ मुस्लिम सेना व गौरी का पीछा न करके छोड़ दिया
→ ये बड़ी भूल तराइन के द्वितीय युद्ध में चुकानी पड़ी।

⇒ तराइन का द्वितीय युद्ध ⇐
→ प्रथम युद्ध के बाद पृथ्वीराज आमोद-प्रमोद मे व्यस्त -
→ गौरी ने पुनः युद्ध हेतु सेना तैयारी की।
→ 1192 ई. में पुनः तराइन के मैदान में दोनो सेनाए।
→ पृथ्वीराज के साथ उनके बहनोई मेवाड़ शासक समरसिंह एवं दिल्ली गवर्नर गोविन्दराज भी थे।
→ साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति से गौरी की विजय
→ अजमेर व दिल्ली पर गौरी का अधिकार.
→ अजमेर का शासन पृथ्वीराज के पुत्र गोविन्दराज को दे दिया,
→ गौरी ने पृथ्वीराज को बन्दी बनाया।
→ गोविन्दराज को उनके चाचा हरिराज ने अजमेर से पदच्युत कर अपना अधिकार किया। तब गोविन्दराज ने रणथम्भौर में चौहानवंश की नींव -
→
→ मुहम्मद गौरी ने भारत का विजित क्षेत्र अपने दास सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को दे दिया। ऐबक ने अजमेर में विग्रहराज-चतुर्थ द्वारा निर्मित संस्कृत पाठशाला को तुड़वाकर अढ़ाई दिन का झोपड़ (मस्जिद) में परिवर्तित करवा दिया।

→ तराइन द्वितीय युद्ध के बाद भारत में स्थायी मुगल साम्राज्य प्रारम्भ,
भारत में मुस्लिम साम्राज्य का संस्थापक - मुहम्मद गौरी बना।

By Aakash Kumar

तराइन के दोनो युद्धों का विवरण -
चन्दबरदाई के पृथ्वीराज रासो, हसन निजामी के ताजुल मासिर, सिराज के तबकात-ए-नासिरी में।

→ तराइन का द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज के हारने के कारण
* चारों ओर राजाओ को अपना शत्रु बना लेना
* दूरदर्शिता का अभाव
* युद्ध की तैयारी न कर आमोद-प्रमोद में व्यस्त रहना
* दुश्मन को कमतर आंकना।
इन सभी कारणो से देश सेकड़ो वर्षो तक गुलामी की जंजीर में जकड़ा

→ ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती मोहम्मद गौरी के साथ पृथ्वीराज चौहान तृतीय के समय राजस्थान आए।
→ जयानक व चन्दबरदाई (पृथ्वीराज चौहान का मित्र)
→ वागीश्वर व जनार्दन (पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि)

→ ध्यान रहे = उक्त कथन चन्दबरदाई के थे।
जिससे पृथ्वीराज चौहान ने तीर छोड़कर मारा था।
ऐसा माना जाता है। (उक्त कथन)↓
चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूके चौहान
→ ऐसा माना जाता है कि सशर्त पृथ्वीराज चौहान अपनी बन्धी आंखो से मुहम्मद गौरी पर तीर चलाते है और मुहम्मद गौरी मारा जाता है और उसे मारकर पृथ्वीराज और चन्दबरदाई दोनो आपस में मर जाते है।

→ चन्दबरदाई द्वारा लिखित पृथ्वीराज रासो को उनके पुत्र जल्हण पूरा करते है।
→ पृथ्वीराज के घोड़े का नाम नाट्य रम्भा था।
→ बून्दी के उम्मेदसिंह के घोड़े का नाम हून्जा था।
→ महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम चेटक था।

By Aadarsh Rathawat

⇒ रणथम्भौर के चौहान ⇐

→ गोविन्दराज ने रणथम्भौर में चौहान वंश की नींव
→ पृथ्वीराज तृतीय के पुत्र
→ कुतुबुद्दीन ऐबक की सहायता से 1194 ई. में नींव
- गोविन्दराज के उत्तराधिकारी को दिल्ली सुल्तान इल्तुतमिश ने पराजित कर दुर्ग पर अधिकार-
→ वंश के शासक वागभट्ट ने पुनः दुर्ग पर अधिकार.

→ (हम्मीर देव चौहान) 1282-1301 ई.
सर्वाधिक प्रतापी एवं अंतिम शासक (रणथम्भौर) के
- पिता - जैत्र सिंह (जयसिंह) माता - हीरादेवी
- पत्नि - रंगदेवी, पुत्री - देवलदे (पदमली)
- इनके लिए कथन भी कहा गया
सिंह सवन सत्पुरुष वचन, कदलन फलत इक बार
तिरिया तेल. हम्मीर हठ, चढ़े न दूजी बार।
→ हठ के लिए प्रसिद्ध
→ दिग्विजय की नीति अपनाई "कोटियजन अश्वमेध यज्ञ" करवाया। जिसके राजपुरोहित "पंडित विश्वरूप" थे।
→ हम्मीर देव के दरबारी कवि - बीजादित्य (विजयादित्य)

। रणथम्भौर दुर्ग का साका ।
→ इतिहासकारों के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति मंगोल मीर मुहम्मदशाह सुल्तान की मराठा बेगम चिमना। कामरू से प्रेम करता था।

→ बेगम ने सेनापति के साथ मिलकर अलाउद्दीन को मारने का षडयंत्र रचा। इसका पता खिलजी को चला।
→ मुहम्मदशाह व बेगम वहां से भागकर हम्मीर की शरण में रणथम्भौर चले गए।
→ अलाउद्दीन ने हम्मीर को पत्र लिखा कि हमारा आपसे कोई द्वेष नहीं है यदि शरणागतों को मार दे या उन्हें सौंपें

= तो शाही सेनाएं पुनः दिल्ली लौट जाएगी
→ हम्मीर अपने वचन व हठ के लिए पक्का था।
→ हम्मीर ने सभी पत्रों के अनुसार मना ही किया।
→ तब अलाउद्दीन ने रणथम्भौर पर 1300 ई. में घेरा डाला।
→ एक वर्ष की लम्बी घेराबन्दी करने के बाद भी असफल।
→ अलाउद्दीन ने हम्मीर के दो सेनापतियों को लालच दिया
→ रणमल व रतिपाल नामक को बून्दी के परगने देने का लालच
→ इस लोगों ने दुर्ग के खाद्यान्न में हड्डियां मिलाकर अपवित्र करदिया
→ इस कारण दुर्ग में खाद्यान्न का संकट उत्पन्न हो गया।

→ ऐसी स्थिति में हम्मीर ने शत्रु से लड़कर मरना उचित समझा
→ 11 जुलाई 1301 ई. में केसरिया किया (राजपूत सैनिकों ने)
→ हम्मीर की रानी रंगदेवी के नेतृत्व में रानियों ने जल जौहर किया।
→ प्रथम जल जौहर एवं राजस्थान का प्रथम साका।
→ हम्मीर देव की पुत्री देवलदे (पद्मला) ने पद्मतालाब में जौहर-

→ 13 जुलाई, 1301 के दिन रणथम्भौर पर खिलजी का अधिकार
→ खिलजी द्वारा मन्दिरों व मूर्तियों को तोड़ने का आदेश-
→ अमीर खुसरो ने कहा- कुफ्र का गढ़ इस्लाम का घर हो गया
→ ~~बाबर के~~ इस युद्ध में खिलजी की सेना का नेतृत्व उगुल खां ने किया।
→ नयनचन्द्र सूरी कृत = हम्मीर महाकाव्य
जिसमें मुहम्मदशाह ने कुछ धन का बंटवारा लेकर हम्मीर देव चौहान के यहां चरण ली "बताया जाता है।
→ चन्द्रशेखर कृत - हम्मीर हठ
इसमें मुहम्मदशाह वचिमना के प्रेम प्रसंग का वर्णन।
→ जोधराज कृत = हम्मीर रासो
→ गोडऊ व्यास कृत = हम्मीरायण
→ बाद में आमेर नरेश मानसिंह ने रणथम्भौर दुर्ग को शिकारगाह के रूप में परिवर्तित किया, बाद में आमेर नरेश पृथ्वीसिंह और सवाई जयसिंह ने दुर्ग का जीर्णोद्धार करवाया।
→ इस दुर्ग के बारे में जलालुद्दीन खिलजी ने कहा था कि ऐसे 10 किलों को तो मैं मुसलमानों के मूंछ के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता

जालौर के चौहान

→ जालौर का प्राचीन नाम जाबालीपुर या जालंधर था
→ यहां के किले को सुवर्णगिरी कहते है।
→ प्रतिहार नरेश नागभट्ट प्रथम ने जालौर को अपनी राजधानी बनाया था।
→ जालौर दुर्ग का निर्माण इसी द्वारा किया जाना माना जाता।
→ जालौर एक प्राचीन नगर था
→ जो गुर्जर प्रदेश का एक हिस्सा था।
→ प्रतिहार नरेश नागभट्ट प्रथम ने जालौर को अपनी राजधानी बनाया।
→ 13 वी सदी में सोनगरा चौहानो का शासन था
→ नाडोल शाखा के कीर्तिपाल चौहान द्वारा स्थापना
→ कीर्तिपाल को सुण्डा पर्वत अभिलेख में राजेश्वर की उपाधि
→ कीर्तिपाल के उत्तराधिकारी समरसिंह हुए।
→ समरसिंह का पुत्र उदयसिंह शक्तिशाली सोनगरा चौहान
→ इल्तुतमिश के आक्रमण को असफल बनाया।

→ कान्हडदेव चौहान =
→ 1305 में कान्हडदे जालौर के शासक बने।
→ अलाउद्दीन खिलजी ने जालौर पर अपना अधिकार करने हेतु योजना बनाई।
→ जालौर के मार्ग में सिवाना का दुर्ग पड़ता है।
→ सर्वप्रथम 1308 में खिलजी ने सिवाना दुर्ग को जीता
→ कमालुद्दीन गर्ग को दुर्ग रक्षक नियुक्त किया -
→ दुर्ग का नाम खैराबाद रखा।
→ यहां पर वीर सातल और सोम वीरगति को प्राप्त -
→ सन् 1311 ई. में अलाउद्दीन ने जालौर पर आक्रमण.
→ कई दिनो के घेरे के बाद अंतिम युद्ध
→ वीर कान्हडदेव सोनगरा और उसके पुत्र वीरमदेव वीरगति -
→ अलाउद्दीन ने इस जीत के बाद जालौर में एक मस्जिद का निर्माण -
→ युद्ध का वर्णन पद्मनाभ के कान्हडदे प्रबंध व वीरमदेव सोनगरा की वात में मिलता है।

नाडोल के चौहान

→ चौहानो की इस शाखा का संस्थापक शाकम्भरी नरेश वाकपति का पुत्र लक्ष्मण चौहान था।
→ 960 ई. में चावड़ा राजपूतो को हराकर चौहान वंश की नींव
→ नाडोल शाखा के कीर्तिपाल चौहान ने 1177 ई. के लगभग मेवाड़ को अपने अधीन कर लिया।
→ 1205 ई. के लगभग नाडोल के चौहान जालौर की चौहान शाखा में मिल गए

सिरोही के चौहान

→ सिरोही में चौहानों की देवड़ा शाखा का शासन था
→ जिसकी स्थापना 1311 ई. के आसपास लुम्बा द्वारा की गई
→ इनकी राजधानी चन्द्रावती थी।
→ बाद में मुस्लिम आक्रान्ताओ के कारण वंश के सहासमल ने 1425 ई. में सिरोही नगर की स्थापना एवं राजधानी
→ इसके काल में कुम्भा (महाराणा) ने सिरोही को अपने अधीन में-
→ 1823 में यहां के शासक शिवसिंह ने ईस्ट इंडिया क. से संधि
→ सिरोही रियासत राजस्थान में जनवरी 1950 में मिला दिया गया

हाड़ौती के चौहान

→ पूर्व में सम्पूर्ण हाड़ौती क्षेत्र बून्दी में आता था -
→ महाभारत के समय से मत्स्य (मीणा) जाति का निवास रहा।
→ 1241 ई. में यहां हाड़ा चौहान देवा ने मीणा शासक को हराकर यहां चौहान वंश की स्थापना की -
→ देवा नाडोल के चौहानो का ही वंशज था।
→ बून्दी का नाम बून्दा मीणा के नाम पर पड़ा था।
→ मेवाड़ नरेश क्षेमसिंह ने बून्दी को अपने अधीन बनाया।
→ 1569 ई. में शासक सुरजनसिंह ने अकबर से संधि की
→ राजस्थान में मराठो का सर्वप्रथम प्रवेश बून्दी में हुआ, 1735 ई. में बुद्धसिंह की कछवाही रानी अमर कुंवरी ने मराठा सरदार होल्कर व राणोजी को आमंत्रित किया, 1818 में बून्दी शासक बिष्णुसिंह ने अंग्रेजो से संधि

By Ashok Kumawat

मारवाड़ का इतिहास

→ मारवाड़ क्षेत्र मुख्यत: जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर जालौर, नागौर, पाली एवं आसपास क्षेत्र।

→ गुर्जर प्रतिहार वंश
→ गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन मुख्यत: आठवीं से 10वीं सदी तक रहा।
→ उस समय राजपुताना का यह क्षेत्र गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश)
→ गुर्जरो के प्रतिहार स्वामी होने के कारण गुर्जर-प्रतिहार
→ मन्दिर स्थापत्य की प्रमुख कला शैली को यही संज्ञा।

→ राजस्थान में गुर्जर-प्रतिहारों की दो शाखाएं
(A) मंडोर शाखा (B) भीनमाल शाखा
→ गुर्जर प्रतिहारों की प्रारम्भिक राजधानी-मंडोर
→ प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल पर अधिकार
→ नागभट्ट प्रथम साम्राज्य विस्तारवादी शासक थे।

→ वत्सराज (778-805) - देवराज का पुत्र
→ माण्डी वंश व बंगाल के धर्मपाल को पराजित किया
→ वत्सराज को रणहस्तिन भी कहा गया है।

→ नागभट्ट द्वितीय (805-833)
→ वत्सराज का पुत्र नागभट्ट द्वितीय सन् 815 में गद्दी पर
→ 816 में कन्नौज पर आक्रमण कर चक्रायुद्ध को पराजित-
→ कन्नौज को प्रतिहार वंश की राजधानी बनाई।
→ 833 ई. में गंगा में जल समाधि ली थी।
→ उसके पुत्र रामभद्र ने 833 में शासन बागडोर संभाली

→ मिहिरभोज (836-885) रामभद्र के उत्तराधिकारी
मिहिरभोज का साम्राज्य विस्तार- पंजाब, अधिकांशत: राजपुताना, उत्तरप्रदेश, भाग, महाराष्ट्र, मालवा इत्यादि।

By Andaan Kumawat

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत
राजस्थान क्लासेज : 8107670333

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh Kumawat

⇒ मिहिरभोज ने आदिवराह, प्रभास आदि विरुद धारण किए।
⇒ मिहिरभोज की अरब यात्री सुलेमान ने (851) प्रशंसा की।

⇒ महेन्द्रपाल प्रथम (885-910) - मिहिरभोज का पुत्र
→ इन्हीं के दरबारी कवि - साहित्यकार राजशेखर ने कर्पूरीमंजरी, काव्य मीमांसा, बाल रामायण, बाल भारत रचा
→ राजशेखर ने महेन्द्रपाल प्रथम को निर्भय नरेश बताया।

⇒ महिपाल (912-944) - महेन्द्रपाल प्रथम के बाद बागडोर
→ तब तक राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय ने प्रतिहारों को हराकर कन्नौज को नष्ट कर दिया था।
→ उसी के समय अरब यात्री अलमसूदी राज्य में यात्रा पर आया
→ 11 वीं सदी में गहड़वालों ने कन्नौज पर अधिकार किया
→ अंतिम गुर्जर-प्रतिहार शासक - यशपाल देव (एभिलेख अनुसार)
→ प्रारम्भिक शासकों की जानकारी भोज प्रतिहार की ग्वालियर प्रशस्ति, उद्योतन सूरी रचित - कुवलयमाला एवं पुरातन प्रबंध संग्रह व हरिवंश पुराण में मिलती है।

⇒ आबू के परमार -
→ आबू व उसके आसपास के क्षेत्रों पर परमारों का शासन
→ वंश का मूल पुरुष धूमराज था
→ वंश के राजा धुंधक ने आबू का दण्डपति महाजन विमलशाह को बनाया, जिसने दिलवाड़ा के प्रसिद्ध आदिनाथ जैन मन्दिर (विमलशाही) का निर्माण 1031 ई. में करवाया।
→ इसका शिल्पी कीर्तिधर था।
→ वागड़ में परमारों की राजधानी आर्थूणा थी।
→ मालवा का राजा भोज परमार प्रतापी शासक हुआ।
→ परमार शासन का अन्त 13वीं सदी के अन्त में हुआ।
→ आबू के अलावा, जालौर, वागड़, मालवा पर भी परमारों के शासन का उल्लेख मिलता है।

राठौड़ वंश

→ राठौड़ का शाब्दिक अर्थ है - राष्ट्रकूट
→ जोधपुर के राठौड़ो का मूल स्थान - कन्नौज
→ मुहणोत नैणसी इन्हे कन्नौज शासक जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते है।
→ पृथ्वीराज रासो, बीकानेर रा राठौड़ां री ख्यात में भी इसी मत का-
→ प० गौरीशंकर हीराचंद ओझा इन्हे बदायूं के राठौड़े का वंशज मानते है।
→ मुहणोत नेणसी के अनुसार मुहम्मद गौरी ने 1193 ई. में कन्नौज पर आक्रमण कर राठौड़ जयचन्द गहड़वाल को हराकर उसका राज्य समाप्त कर दिया था -
→ कुछ वर्षो बाद जयचंद के पौत्र सीहाजी व उनके सरदार 13वीं सदी में राजस्थान आ गए
→ पाली के उत्तरपश्चिम में छोटा सा राज्य स्थापित किया -
→ राव सीहा मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक एवं आदि पुरुष माने जाते है। पिता - सेतराम, माता - पार्वती

* राव चूंडा - राव वीरमदेव का पुत्र, प्रथम प्रतापी शासक
→ मण्डोर को मारवाड़ की राजधानी बनाया। जो मांडू के सुबेदार से जीतकर बनाई -
→ मारवाड़ राज्य में सामन्त प्रथा का प्रारम्भ चूंडा द्वारा
→ राव चूडा की रानी चांदकवर ने चान्दबावड़ी बनाई।

→ राव चूडा ने नागौर के सूबेदार जल्लाल खां को हराकर नागौर के पास चूडासर बसाया था।
→ राव चूडा ने अपनी मोहिलाणी रानी के पुत्र "कान्हा" को राज्य का उत्तराधिकारी नियुक्त एवं अपने ज्येष्ठ पुत्र रणमल को अधिकार से वंचित कर दिया।
→ तथा रणमल मेवाड़ चले जाते जो राणा लाखा राणा मोकल, महाराणा कुम्भा को अपनी सेवाएं दी

By Aadarsh Kumawat

→ 1438 ई. में मेवाड़ के सामन्तो ने षडयंत्र रचकर कुम्भा के कहने पर रणमल की हत्या कर दी।
→ चूडा की पुत्री हंसाबाई का विवाह मेवाड़ के राणा लाखा के साथ हुआ।
→ रणमल की हत्या चित्तौड़ में हुई थी (कुम्भा के कहने पर)

* राव जोधा * 1438 से 1489 तक
– रणमल का पुत्र
→ पिता की हत्या के बाद मेवाड़ से चुपचाप भाग निकले।
→ मेवाड़ की सेना व महाराणा मोकल के ज्येष्ठ भ्राता रावत चूडा के नेतृत्व में जोधा का पीछा एवं मण्डोर पर अधिकार
→ राव जोधा ने 1453 ई. में पुनः मण्डोर पर अधिकार किया -
→ सन् 1459 ई. में राव जोधा ने चिड़ियाँटूंक पहाड़ी पर जोधपुर दुर्ग (मेहरानगढ़) का निर्माण करवाया
→ पास में जोधपुर नगर की स्थापना की - 12 मई 1459 ई.
→ मेहरानगढ़ - मयूरध्वजगढ़, गढचिन्तामणि, सूर्यगढ़, कागमुखी

→ मेहरानगढ़ की नींव करणीमाता के हाथों से रखी गई थी।
→ राव जोधा ने अपनी पुत्री का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल के साथ किया - कहा जाता है।
→ राव जोधा के प्रमुख दो उत्तराधिकारी - राव सातल व राव सूजा

* राव गांगा *
→ राव सूजा की मृत्यु के उसका पौत्र गांगा गद्दी पर बैठा
→ राव गांगा बाघाजी के पुत्र
→ खानवा युद्ध में (1527) राव गांगा अपने पुत्र मालदेव के साथ सांगा की सहायता की क्योंकि सांगा की पुत्री पद्मावती इनकी पत्नि थी
→ राव गंगा ने गांगलोव तालाब, गांगा की बावड़ी, गंगश्यामजी मन्दिर का निर्माण करवाया -
→ माना जाता है राव मालदेव ने अपने पिता गांगा की खिड़की से गिराकर हत्या कर दी थी - मारवाड़ के पितृहन्ता = मालदेव

* राव मालदेव *

→ राव गांगा का बड़ा पुत्र
→ मालदेव ने उदयसिंह को मेवाड़ का शासक बनाने में बनवीर से प्रतिशोध लेने पर सहायता की।
→ राज्याभिषेक- सोजत (पाली) में हुआ।
→ इनके समय में सिवाणा के शासक- राणा डूंगरसी
→ इनके समय में बीकानेर के शासक राव जैतसी था-
→ राव मालदेव 5 जून, 1531 को जोधपुर की गद्दी पर
→ दिल्ली पर मुगल बादशाह हूंमायू का शासन था
→
→ मालदेव की पत्नि उमादे (जो जैसलमेर राव लूणकर्ण की पुत्री) को रूठी रानी के नाम से जाना जाता है।
विवाह के बाद रूठी रानी के रूप में तारागढ़ दुर्ग (अजमेर) में रही।
→ मालदेव की रानी उमादे (रूठी रानी) को तारागढ से मनाकर ईश्वरदास जी जोधपुर लेकर आए लेकिन आसा बारहट ने रानी को एक दोहा सुनाया जिससे वह वापस नाराज हो गई।
⇒ गिरि-सुमेल युद्ध → 1543 ई. में दिल्ली के अफगान बादशाह सूरी ने मालदेव पर चढ़ाई की।
जैतारण (जिला-पाली) के निकट गिरि-सुमेल नामक स्थान पर जनवरी 1544 मे दोनो की सेनाओं के मध्य युद्ध
→ जिसमे शेरशाह सूरी की बड़ी कठिनाई से विजय हुई।
- तब उसने कहा कि मुट्ठी भर बाजरा के लिए मैंने हिन्दुस्तान की बादशाहत खो दी होती, बीकानेर कल्याणमल इसके साथ था।
→ इस युद्ध में सेनानायक जैता व कूंपा वीरगति को प्राप्त-
→ शेरशाह ने यहां का प्रबंधक खवास खां को सौंप दिया
→ मालदेव ने पोकरण का किला, मालकोट (मेड़ता) का किला शेरगढ़ दुर्ग (धौलपुर) सोजत किला, सारन, व रीयां का निर्माण-
→ अबुल फजल ने मालदेव को हशमतवाला शासक व फरिश्ता कहा
→ बदायूंनी ने इन्हे भारत का महान पुरुषार्थी राजकुमार कहा-
→ 52 युद्धो का नायक, 18 परगनो के रूप में प्रतिष्ठित माने जाते है।
→ 1541 में राव जैतसी को पाहेबा युद्ध में हराया, मृत्यु- 7 नवम्बर 1562
→

* राव चन्द्रसेन * 1562-1581 ई. तक

→ राव चन्द्रसेन, राव मालदेव के छठे पुत्र थे।
→ जन्म - 16 जुलाई 1541 को
→ मारवाड़ गद्दी पर 1562 को मालदेव देहान्त बाद
→ भाइयों में कलह होने पर अकबर ने इसका लाभ उठाया।
→ अकबर ने नागौर से हाकिम हुसैनकुली बेग को राव चन्द्रसेन पर चढ़ाई कर जोधपुर किला जीतने का आदेश दिया।
→ राव चन्द्रसेन परिवार सहित भाद्राजूण चले गए (पाली)
→ 1564 ई. में जोधपुर किले पर मुगल सेना का अधिकार
→ अकबर द्वारा 3 नवम्बर 1570 को नागौर दरबार लगाया गया
→ जिसमें चन्द्रसेन ने उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की
→
→ 30 अक्टूबर 1572 को जोधपुर का प्रशासन बीकानेर के रायसिंह को सौंपा।
→ चन्द्रसेन ने जीवन भर अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की
→ इन्हें - मारवाड़ का प्रताप, प्रताप का अग्रगामी, भूला बिसरा राजा, विस्मृत नायक आदि नामों से जाना जाता
→ चन्द्रसेन ने कुछ प्रतिशोध महाराणा प्रताप के साथ मिलकर भी लिए

नागौर दरबार

→ नवम्बर 1570 में अकबर ने नागौर में दरबार लगाया -
→ जिसमें कई राजपूत राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार की
→ जिसमें - चन्द्रसेन के बड़े भाई - उदयसिंह, जैसलमेर नरेश रावल हरराय जी, बीकानेर नरेश राव कल्याणमल ने सन्धि की।
→ राव चन्द्रसेन भाद्राजूण से नागौर दरबार में आये थे परन्तु चन्द्रसेन ने अकबर की गुलामी स्वीकार नहीं की।
→ इस पर अकबर ने नाराज होकर अपने अधीन करने के लिए सन् 1574 ई. में जलाल खां व 1576-77 में शाहबाज खाँ के नेतृत्व में अपनी सेना भेजी, भाद्राजूण पर अधिकार किया
→ चन्द्रसेन वहां से सिवाणा चले गए,

By Aadarsh kumawat

→ इस दरबार के बाद अकबर ने 30 अक्टूबर 1572 ई. में बीकानेर के शासक कल्याणमल के पुत्र कुंवर रायसिंह को जोधपुर का सुबेदार नियुक्त किया।
→ अकबर ने सिवाणा पर भी सेना भेजी → इसमें शाहकुली खां, राव रायसिंह, केशवदास मेड़तिया ने सिवाणा हेतु प्रयाण किया।

→ राव चन्द्रसेन अपने सेनापति राठौड़ पत्ता को सिवाणा किले की रक्षा का भार सौंपकर पीपलोद व काणूजा पहाड़ियों की तरफ निकल गए।
→ इसके बाद चन्द्रसेन को दबाने के लिए 1574 ई. में जलालखां को सिवाना भेजा गया।
→ लेकिन चन्द्रसेन के हाथों वह मारा गया।
→ 1576-77 में शाहबाज खां के नेतृत्व में शाही सेना भेजी गई, लेकिन चन्द्रसेन पकड़ने में असफल रहे।

→ अन्त में चन्द्रसेन ने सारण के पर्वतो (सोजत) में अपना निवास स्थान बनाया।
→ सचियाप में 11 जनवरी 1581 अचानक स्वर्गवास
→ सारण में दाह संस्कार वही पर घोड़े पर सवार प्रतिमा
→ एवं उनकी प्रतिमा के आगे 5 स्त्रियां खड़ी है।
→ माना जाता है कि उनके पीछे 5 स्त्रियां सती हुई।
→ अकबरकालीन राजस्थान के प्रथम मनस्वी वीर और स्वतंत्र प्रकृति के नरेश थे - चन्द्रसेन
→ महाराणा प्रताप ने इन्ही के दिखलाए मार्ग का अनुसरण किया
→ महाराणा प्रताप व चन्द्रसेन (दो स्वाभिमानी) अकबर के कांटे।
→ चन्द्रसेन ऐसा पहला राजस्थानी शासक था जिसने मुगल विरोधी अभियान को पूरे दृढ़ता से प्रारम्भ किया।
→ राव चन्द्रसेन ऐसे शासक जिन्होने रणनीति में दुर्ग के स्थान पर जंगल और पहाड़ी क्षेत्र को अधिक महत्व दिया।
→ छापामार पद्धति मे सर्वप्रथम उदयसिंह (मेवाड़) एवं दूसरे शासक राव चन्द्रसेन व तीसरे महाराणा प्रताप थे।

By Aadarsh Kumawat

→ मोटाराजा राव उदयसिंह ← 1583-1595
→ राव चन्द्रसेन के बड़े भ्राता उदयसिंह
→ नागोर दरबार में अकबर की सेवा में
→ वीरता व सेवा से प्रसन्न अकबर ने उन्हे 4 अगस्त 1583 को जोधपुर का शासक बना दिया
→ जोधपुर के प्रथम शासक उदयसिंह जिन्होने मुगल अधीनता स्वीकार कर अपनी पुत्री मानीबाई का 1587 में विवाह शाहजादा सलीम से कर वैवाहिक सम्बध स्थापित -
→ मानीबाई - जोधाबाई, जगत गुसाई, भानवती का पुत्र शाहजहाँ।
→ मोटाराजा के नाम से भी जाना जाता है।
→
→ उदयसिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र शूरसिंह जी सन् 1595 में जोधपुर के सिंहासन पर आसीन हुए।
→ शूरसिंह के बाद उनके पुत्र गजसिंह 1619 ई. में 8 अक्टूबर को जोधपुर की गद्दी पर विराजमान हुए
→ जहांगीर ने गजसिंह को दलथम्भन (फौज को रोकने वाला) की पदवी दी थी जिन्होने दक्षिण भारत में मलिक अम्बर की सेनाओं पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में प्रदान की थी।

→ जसवन्त सिंह - प्रथम ← 1638 - 1678 ई.
→ गजसिंह के बाद प्रिय पुत्र जसवतसिंह जोधपुर के शासक
→ आगरा में इनका राजतिलक किया जिन्म - 26-12-1626 बुरहानपुर
→ जसवंत सिंह प्रथम के संरक्षक ठाकुर राजसिंह कूम्पावत था।
→ शाहजहाँ ने इन्हे महाराजा की उपाधि दी थी।
→ 1656 में शाहजहाँ के बीमार हो जाने पर उसके चारो पुत्रो मे उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ।
→ जसवन्तसिंह ने बड़े पुत्र दाराशिकोह का साथ दिया।
→ औरंगजेब को हराने के लिए उज्जैन की तरफ सेना लेकर गए
→ जसवन्तसिंह (जोधपुर) ने सिद्धान्त बोध, आनन्द विलास और भाषा भूषण पुस्तके लिखी। नाटक - प्रबोध चन्द्रोदय

⇒ धरमत का युद्ध - औरंगजेब एवं दाराशिकोह के मध्य धरमत (उज्जैन, मध्यप्रदेश) 1657 को
→ जसवन्तसिंह प्रथम ने दाराशिकोह की शाही सेना का नेतृत्व किया लेकिन शाही सेना हार गई।

→ दौराई का युद्ध - पुनः दाराशिकोह व औरंगजेब के मध्य 11 मार्च से 15 मार्च 1659 के मध्य (तक) इसमे भी दाराशिकोह बुरी तरह हारा।

→ महाराजा जसवन्तसिंह ने दक्षिण के शिवाजी को भी मुगलो से संधि करने हेतु राजी किया
→ शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को शाहजादा मुअज्जम के पास लाए और दोनो के मध्य शान्ति संधि करवाई

→ औरंगाबाद के निकट जसवंतपुरा नामक कस्बा बसाया था।
→ वीर दुर्गादास इन्ही का सेनापति था।
→ मुहणोत नेणसी इन्ही के दरबारी कवि थे।
नैणसी री ख्यात व मारवाड़ रा परगना री विगत अंतिम दिनो में महाराजा से अनबन, कैदखाने में डाले गए जहां नैणसी ने आत्महत्या कर ली थी।
- नैणसी को मारवाड़ का अबुल फजल कहा जाता है (राज०)

→ 28 नवम्बर, सन् 1678 में जसवन्त सिंह प्रथम का जमरूद (अफगानिस्तान) में देहान्त हो गया
→ मृत्यु के समय इनकी रानी गर्भवती थी परन्तु जीवित उत्तराधिकारी न होने के कारण औरंगजेब ने जोधपुर राज्य को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
→ जसवंतसिंह प्रथम की मृत्यु पर औरंगजेब के कहा था कि "आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया है।
कुफ्र (धर्म विरोध)
→ 1679 ई. में औरंगजेब ने इन्द्रसिंह को मारवाड़ शासक बनाया।

By Aadarsh Kanawat

⇒ महाराजा अजीतसिंह ←

⇒ जसवन्त सिंह प्रथम का पुत्र (गर्भवती रानी जो जसवन्तसिंह की मृत्यु के समय थी)

→ अजीत सिंह का जन्म 19 फरवरी, 1679 को लाहौर में

→ जोधपुर के राठौड़ सरदार वीर दुर्गादास व अन्य सरदारों ने अजीतसिंह को जोधपुर का शासक नियुक्त करने की मांग की लेकिन औरंगजेब ने इसे टाल दिया।
कहा - राजकुमार के बड़ा हो जाने के बाद राजा बना दिया जाएगा

→ औरंगजेब की चालाकी को दुर्गादास समझ गए।

→ दुर्गादास ने राजकुमार अजीतसिंह व रानियों को बाघेली नामक महिला की मदद से औरंगजेब के चंगुल से बाहर निकलकर सिरोही के कालिन्दी स्थान पर जयदेव नामक ब्राह्मण के घर कुछ समय हेतु रुके।

→ फिर यहां से मेवाड़ में शरण ली

→ राजसिंह ने अजीतसिंह के निर्वाह हेतु दुर्गादास को केलवा जागीर दी

⇒ देबारी समझौता -

⇒ राजकुमार अजीतसिंह, कच्छवाहा राजा सवाई जयसिंह व मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय के मध्य समझौता। जिसके अनुसार अजीतसिंह को मारवाड़ में, सवाई जयसिंह को आमेर में पदस्थापित करने तथा महाराणा अमरसिंह द्वितीय की पुत्री का विवाह सवाई जयसिंह से करने एवं इस विवाह से उत्पन्न पुत्र को सवाई जयसिंह का उत्तराधिकारी घोषित करने की सहमति हुई

⇒ औरंगजेब की मृत्यु के बाद महाराजा अजीतसिंह ने वीर दुर्गादास व अन्य सैनिकों की मदद से जोधपुर पर अधिकार कर लिया

→ स्वामीभक्त दुर्गादास को अजीतसिंह ने राज्य से निस्कासित कर दिया

→ गलत लोगों के बहकावे में आकर अजीतसिंह ने ऐसा किया

→ वीर दुर्गादास उस समय मेवाड़ की सेवा में चले गए।

→ महाराजा अजीतसिंह ने बादशाह फर्रुखसियर से सन्धि कर ली

→ अपनी पुत्री इन्द्रकुंवरी का विवाह फर्रुखशियर से करवा दिया।

By Aadarsh Kumawat

→ अजीतसिंह के दो पुत्र - अभयसिंह, छोटा - बख्तसिंह
→ बख्तसिंह ने सोते हुए अजीतसिंह की हत्या कर दी -
→ अतः बख्तसिंह को मारवाड़ का दूसरा पितृहन्ता कहते हैं।
→ इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अजीतसिंह राजा को 'कान का कच्चा' कहा है।

⇒ राठौड़ दुर्गादास ⇐
→ जन्म - 13 अगस्त 1638
→ आसकरण के घर मारवाड़ के सालवा गांव में हुआ।
→ जसवन्त सिंह प्रथम के मंत्री - आसकरण
→ महाराजा जसवंतसिंह देहान्त के बाद राजकुमार अजीतसिंह की रक्षा व उन्हे पुनः जोधपुर राज्य दिलाने में वीर दुर्गादास का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

→ राजस्थान में पन्नाधाय (मेवाड़) के बाद स्वामीभक्ति में ये दूसरे व्यक्ति जिनकी स्वामीभक्ति अनुकरणीय थी।
→ इन्हे - मारवाड़ का चाणक्य
- मारवाड़ का अणमोल बिन्दिया मोती
- राठौड़ो का यूलिसेज, मारवाड़ के स्वामीभक्त

→ मृत्यु - उज्जैन में 22 नवम्बर 1718 को
→ यहां शिप्रा नदी के किनारे इनकी छतरी बनी
→ ये कथन दुर्गादास के लिए
मायड़ ऐड़ो पूत जण जेड़ो दुर्गादास।

⇒ महाराजा मानसिंह ⇐ 1803 - 1843
→ 1803 में जोधपुर सिंहासन पर बैठे
→ जब मानसिंह जालौर में मारवाड़ की सेना से घिरे हुए थे (उत्तराधिकारी युद्ध में)
→ तब गोरखनाथ सम्प्रदाय के गुरु आयस देवनाथ ने भविष्यवाणी की थी कि शीघ्र ही मारवाड़ के शासक मानसिंह बनेंगे।

→ तब मानसिंह ने देवनाथ को अपना गुरु बनाया
→ नाथ सम्प्रदाय के महामन्दिर का निर्माण करवाया।
→ इन्हें सन्यासी राजा भी कहते हैं।
→ जोधपुर किले में पुस्तक 'प्रकाश पुस्तकालय' की स्थापना
→ इनके दरबारी कवि बांकीदास थे।
→ गिंगोली का युद्ध = कारण - कृष्णाकुमारी विवाद
मेवाड़ महाराणा भीमसिंह की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह के विवाद मे जयपुर राज्य की महाराजा जगतसिंह की सेना, अमीर खां एवं अन्य सेनाओ ने संयुक्त रूप से जोधपुर पर मार्च 1807 में आक्रमण कर दिया अधिकांश हिस्से पर जयपुर का कब्जा।
→ 16 जनवरी 1818 को मारवाड़ ने अंग्रेजो से संधि की
→ मारवाड़ की सुरक्षा का भार ईस्ट इण्डिया क. को सौंप दिया।
→ इससे पहले मानसिंह ने धीरे-2 वापिस जोधपुर राज्य का विस्तार पुनः जोधपुर में लिया।
और जोधपुर का शासक अपने पुत्र छत्रसिंह को बनाया। लेकिन छत्रसिंह की कम समय में मृत्यु हो गई थी
→ उसके बाद अंग्रेजो से संधि की।

अमरसिंह राठौड़

→ जोधपुर के गजसिंह का पुत्र, महाराजा जसवन्तसिंह का भाई जो नाराज होकर शाहजहां की सेवा में चला गया।
→ सन् 1644 ई. में उसने शाहजहां के साले व मीरबक्शी सलावत खां की भरे दरबार में हत्या कर दी थी।
→ सन् 1644 ई. में "मतीरे की राड" नामक युद्ध अमरसिंह राठौड़ व बीकानेर के कर्णसिंह के मध्य लड़ा गया
→ अमरसिंह को नागौर का शासक बनाया।
→ वीरता के कारण राजस्थानी ख्यातों में प्रसिद्ध।

बीकानेर का इतिहास

बीकानेर के राठौड़

→ राव बीका ← 1465-1504 ई. तक

→ राव जोधा के पुत्र

→ बीकानेर में राठौड़ वंश के संस्थापक

→ करणी माता के आशीर्वाद से छोटे-बड़े स्थानों एवं कबीलों को जीतकर जांगलप्रदेश में सन् 1465 में राठौड़ राजवंश की स्थापना की।

→ 1488 ई. में बीकानेर नगर की स्थापना की

→ नेरा जाट के सहयोग से (बीका + नेरा =) संयुक्त नाम

→ राव बीका का स्वर्गवास 1504 में हुआ

→ राव बीका ने जोधपुर शासक राव सूजा को पराजित कर राठौड़ वंश के सारे राजकीय चिन्ह छिनकर बीकानेर ले आए थे।

→ राव बीका की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र "नरा" बीकानेर का शासक बना।

→ राव लूणकरण (1504-1526)

→ अपने बड़े भाई नरा की असामयिक मृत्यु हो जाने पर राव लूणकरण शासक बना।

→ लूणकरण दानी, धार्मिक, प्रजापालक, गुणीजनों का सम्मान-

→ बीदा सूजा ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ राव जैतसी रो छन्द में इन्हें "कर्ण" अथवा कलियुग का कर्ण कहा।

→ कर्मचन्द्रवंशोत्कीर्तनिक काव्यम् में लूणकरण की दानशीलता की तुलना कर्ण से की गई।

→ सन् 1526 ई. में लूणकरण ने नारनौल के नवाब पर आक्रमण कर दिया परन्तु घोंसा नामक स्थान पर हुए युद्ध में लूणकरण वीर गति को प्राप्त हुए।

राव जैतसी (1526-1541) ई तक

→ पिता की मृत्यु के बाद बीकानेर की बागडोर जैतसी ने -
→ बाबर के पुत्र व लाहौर के शासक कामरान ने सुदृढ़ किले भटनेर को सन् 1534 में अपने अधिकार में
→ कामरान द्वारा बीकानेर पर भी आक्रमण किया गया और कब्जा भी, लेकिन राव जैतसी ने 26 अक्टूबर 1534 को एक मजबूत सेना द्वारा कामरान पर आक्रमण -
→ अप्रत्याशित मुगल सेना बीकानेर छोड़कर भाग गई एवं राव जैतसी की विजय होती है।
→ युद्ध का विस्तृत वर्णन - वीठू सूजा द्वारा कृत राव जैतसी रो छंद ग्रन्थ में मिलता है।
→ गिरिसुमेल युद्ध में इनके पुत्र कल्याणमल ने शेरशाह सूरी की सहायता की थी
→ शेरशाह ने बीकानेर का राज्य राव कल्याणमल को दे दिया।
→ मालदेव व जैतसी के साथ पहोबा का युद्ध, जैतसी वीरगति - 1541

राव कल्याणमल (1544-1574)

→ राव जैतसी का पुत्र, जैतसी की मृत्यु के समय सिरसा में था
→ कल्याणमल ने नागौर दरबार (1570) में अकबर की अधीनता
→ अकबर ने 1572 में कल्याणमल के पुत्र रायसिंह को जोधपुर का प्रशासन सौंप दिया।
→ कवि पृथ्वीराज राठौड़ (पीथल) कल्याणमल का ही पुत्र था।
- प्रसिद्ध रचना - वेलि कृष्ण रुकमणि री
→ दुरसा आढ़ा ने इस रचना को पांचवा वेद एवं 19वीं पुराण कहा है।
→ डॉ. टेस्सीटोरी ने ~~अकबर~~ कवि राठौड़ को डिंगल का हेरोज कहा है।
→ अकबर ने कवि पृथ्वीराज राठौड़ को गागरोन का किला जागीर में दिया था।
→ 1574 में कल्याणमल का देहान्त।
→ बीकानेर के पहले शासक अकबर की अधीनता स्वीकार की
→ महाराजा रायसिंह ने भद्रकाली मन्दिर का निर्माण करवाया था

राजा रायसिंह (1574-1612 ई तक)

→ जन्म - 20 जुलाई, 1541

→ पिता - कल्याणमल के देहावसान के बाद सन् 1574 में वे बीकानेर बने।

→ जोधपुर का प्रशासक : 1572 ई. में अकबर ने कुंवर रायसिंह को जोधपुर का प्रशासक - वहां उनका तीन वर्ष तक अधिकार रहा।

→ चन्द्रसेन पर चढ़ाई - जोधपुर के राव चन्द्रसेन ने जोधपुर व मारवाड़ पर मुगल सेना का अधिकार हो जाने के बाद सिवाणा को अपना ठिकाना बना लिया था।

→ रायसिंह के नेतृत्व में अकबर ने सिवाणा दुर्ग पर अधिकार हेतु 1574 में शाही सेना भेजी

→ पहले सोजत का किला उसके बाद सिवाणा दुर्ग पर अधिकार

→ 1576 ई. में जालौर के ताज खां एवं सिरोही के सुरताण देवड़ा को पराजित कर अकबर के समक्ष -

→ रायसिंह दानवीर एवं विद्यानुरागी भी थे - इसीलिए मुंशी देवीप्रसाद ने इन्हे राजपुताने का कर्ण कहा

→ कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तनक काव्य में इन्हे राजेन्द्र कहा -

→ अकबर ने इन्हें महाराज की पदवी प्रदान की

→ बीकानेर का शासक बनते ही रायसिंह ने महाराजाधिराज और महाराज की उपाधियां धारण की

→ बीकानेर में इन्होने अपने मंत्री कर्मचन्द की देखरेख में 1589-94 ई. में जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण

→ रायसिंह प्रशस्ति उत्कीर्ण करवाई

→ किले के प्रवेश द्वार सुरजपोल पर जयमल पत्ता की मूर्तियां हाथी पर सवार पाषाण मूर्तियां रायसिंह द्वारा स्थापित करवाई

→ जूनागढ़ दुर्ग में राजस्थान की सबसे पहली लिफ्ट स्थित।

→ रायसिंह ने रायसिंह महोत्सव व ज्योतिष रत्नमाला की रचना

→ मंत्री कर्मचन्द ने पुत्र दलपतसिंह को गद्दी पर बिठाने का षड्यन्त्र रचा

→ रायसिंह ने ठाकुर मालदे को मारने का आदेश, लेकिन कर्मचन्द अकबर के पास चला जाता है।

महाराजा कर्णसिंह 1631-1669 ई.

→ सुरसिंह के पुत्र, 1631 में बीकानेर के सिंहासन पर
→ औरंगजेब के विशेष कृपापात्र
→ औरंगजेब ने इन्हे जांगलधर बादशाह की उपाधि दी
→ इनके आश्रित कवि- गंगानंद मैथिलीने कर्णभूषण एवं काव्य डाकिनी ग्रन्थ लिखे, (साहित्य कल्पद्रुम प्रमुख है
→ साहित्य कल्पद्रुम की रचना स्वयं कर्णसिंह द्वारा की गई
→ 1645 ई. में कर्णसिंह व नागौर शासक अमरसिंह के मध्य "मतीरे की राड" नामक युद्ध हुआ था।

महाराजा अनूप सिंह (1669-1698)

→ बीकानेर का शासन 1669 में सम्भाला
→ दक्षिण में मराठो के विरुद्ध की गई कार्यवाहियों से प्रसन्न होकर औरंगजेब ने इन्हे "महाराजा" एवं माही मरातिब का खिताब देकर सम्मानित किया।

→ इनके द्वारा स्थापित अनूप पुस्तकालय में वर्तमान में बड़ी संख्या में महत्वपूर्ण ग्रन्थो का संग्रह है।
- दयालदास की बीकानेर रे राठौड़ री ख्यात में बीकानेर व जोधपुर के राठौड़ वंश का वर्णन।
→ अनूपसिंह ने अनेक संस्कृत ग्रन्थ लिखे - अनूपविवेक काम प्रबोध, अनूपोदय,
→ दरबारी कवि मणिराम ने - अनूप व्यवहार सागर, अनूपविलास
→ अनंत भट्ट ने - तीर्थ रत्नाकर, संगीताचार्य भावभट्टने संगीत अनूपांकुश, अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत रत्नाकर।
→ इन्होने दक्षिण में मिली मूर्तियों को तेतीस करोड़ देवताओ के मन्दिर में सुरक्षित रखे।
→ महाराजा सुरतसिंह 16 अप्रैल 1805 को मंगलवार के दिन भाटियो को हराकर इन्होने भटनेर को बीकानेर में मिला लिया
→ हनुमानजी के वार मंगलवार के कारण नाम हनुमानगढ़ रखा।
→ मार्च 1818 में बीकानेर सुरतसिंह ने अंग्रेजो (ई.इ.क.) से सन्धि

By Aadarsh Rawat

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

→ 1835 ई. में जैसलमेर व बीकानेर की सेनाओ की बीच बासणी की लड़ाई हुई
→ राजस्थान के दो राज्यो के बीच हुई यह अन्तिम लड़ाई।

→ 1848 में बीकानेर नरेश रतनसिंह ने मूलतान के दीवान मूलराज के बागी होने पर उसके दमन में अंग्रेजो की सहायता की।

→ 1857 की क्रान्ति के समय बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह थे जो अंग्रेजो के साथ पंजाब तक गए।
→ बीकानेर के लालसिंह ऐसे व्यक्ति जो स्वयं राजा नही बने परन्तु दो पुत्र डुंगरसिंह व गंगासिंह राजा बने

→ बीकानेर के राजा डुंगरसिंह के समय 1886 को राजस्थान में सर्वप्रथम बीकानेर रियासत में बिजली का शुभारम्भ
→ 1927 ई. में बीकानेर के महाराजा गंगासिंह (आधुनिक भारत का भागीरथ) राजस्थान में गंगलहर लेकर आए जिसका उद्घाटन वायसराय लॉर्ड इरविन ने किया।
→ बीकानेर रियासत के अंतिम शासक सादुलसिंह थे।

किशनगढ़ के राठौड़

→ स्थापना 1609 में जोधपुर के शासक मोटाराजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने की थी।
→ जहांगीर ने यहां के शासक को महाराजा का खिताब दिया
→ महाराजा सावंतसिंह प्रसिद्ध राजा हुए, जो कृष्ण भक्ति में राज-पाट छोड़कर वृंदावन चले गए नागरीदास नाम से प्रसिद्ध हुए।
→ बणी-ठणी पेंटिंग इन्ही से सम्बंधित है।
→ राजस्थान में राठौड़ो की तीसरी शाखा व रियासत किशनगढ़ ही हुई।

By Nagesh Kumawat

आमेर का कच्छवाहा वंश

→ कच्छवाह अपने आप को भगवान श्री राम के पुत्र कुश की सन्तान मानते है।
→ वंश के नरवर के शासक सोढा सिंह के पुत्र दुलहराय ने सन 1137 के लगभग रामगढ़ (ढूंढाड़) में मीणों को हराकर तथा बाद में दौसा के बड़गुजरों को हराकर कच्छवाहा वंश स्थापित।

→ रामगढ़ में अपनी कुलदेवी जमुवाय माता का मन्दिर बनाया
→ इन्ही के पौत्र कोकिलदेव ने सन 1207 में आमेर को अपनी राजधानी बनाया। मीणाओं को पराजित करके-
→ इस वंश के शासक पृथ्वीराज महाराणा सांगा के सामन्त थे जिन्होने खानवा युद्ध में सांगा का साथ दिया
→ पृथ्वीराज के पुत्र सांगा ने सांगानेर कस्बा बसाया था।

→ राजध्वज : पंचरंगी ध्वजा (नीला, पीला, लाल, हरा व सफेद)
→ राजवाक्य - यतो धर्म स्ततो जयः था
→ कदमी महल - कच्छवाह शासको का राज्याभिषेक होता था।
→ दुल्हराय का बचपन का नाम तेजकरण था।
→ बारहकोटड़ी - पृथ्वीराज कच्छवाहा ने अपना राज्य अपने 12 पुत्रों में बारह भागों में विभाजित कर उसमें बाट दिया इसलि
→ 1207 (कोकिलदेव) से 1727 तक आमेर राजधानी रही।

→ गुलाब के फूलों के उत्पादन हेतु रामगढ़ को ढूंढाड़ का पुष्कर कहते
→ इसी वंश के शेखा ने शेखावाटी में अपना अलग राज्य बनाय

→ रतनसिंह कच्छवाहा - राजपूताने का पहला शासक था जिसने अफगान शासक शेरशाह सूरी की अधीनता स्वीकार की
→ कच्छवाहा मूलतः ग्वालियर के निवासी थे।

By Aadarsh Kumawat

राजा भारमल / बिहारीमल (1547-1573)

→ सांगा के भाई भारमल ने 1547 ई. आमेर का शासन
→ भारमल ने जनवरी 1562 में मुगल सम्राट अकबर से उसकी अजमेर यात्रा में चगताई खां की मदद से सांगानेर के निकट अकबर की अधीनता स्वीकार।

- बाद में साम्भर में अपनी पुत्री हरकूबाई का विवाह अकबर से करवाकर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित
→ जो बाद में जोधाबाई के नाम से प्रसिद्ध हुई
→ बेगम मरियम उज्जमानी के नाम से भी जानी जाती।
→ इसी ने बाद में सलीम (जहांगीर) को जन्म दिया।
→ राजपूताने के पहले शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की और वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किए।

→ अकबर ने "अमीर-उल-उमरा" की उपाधि दी।
- भारमल की सहायता से 1570 में अकबर ने नागौर दरबार लगाया

= भगवन्त दास (1574-1589)
→ भगवन्त दास व भगवान दास - भारमल का पुत्र
→ अकबर ने राजपूतों में पहली बार इन्हें 5000 की मनसबदारी थी।
→ अपनी पुत्री मानबाई का विवाह शाहजादा सलीम (जहांगीर) के साथ करवाया, 13 फरवरी 1585 को।
मानबाई, मनभावती, सुल्तान-ए-निसा, शाह बेगम
→ भगवन्त दास की मृत्यु लाहौर में हुई।
→ खुसरो मानबाई का ही पुत्र था।
→ खुसरो के अलावा जहांगीर के तीन पुत्र थे।
→ नूरजहां शहरयार को राजा बनाना चाहती थी
→ खुर्रम ने शहरयार की हत्या कर दी थी।
→ शाहजहां के नाम से सिंहासन पर बैठा था।

By Aadarsh Kumawat

RAJASTHAN CLASSES

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh kumawat

Pdf को अपने मित्रो के साथ शेयर जरुर करें

मानसिंह प्रथम (1589-1614)

→ भगवन्तदास के पुत्र, जन्म - 2 दिसम्बर 1550, मौजमाब
→ मानसिंह ने 1562 ई. से जीवनपर्यन्त (1614) तक मुगल साम्राज्य की सेनानायक, सूबेदारी, मनसबदारी की सेवा
→ अकबर ने इन्हे सात हजारी जात एवं मनसबदारी दी थी
→ अकबर का सर्वाधिक विश्वस्त शासक, 1589 में आमेर का शासक
→ 12 वर्षो की आयु की आयु में अकबर की सेवा में
→ अकबर के नवरत्नों में से एक,
→ अकबर ने मानसिंह को फर्जन्द व राजा की उपाधि
→ प्रथम बार राज्याभिषेक 1590 में पटना में, दूसरी बार आमेर
→ मानसिंह ने बंगाल में अकबर नगर तो बिहार में मानपुर नगर बसाया।

→ महाराणा प्रताप से भेंट - जून 1573 को अकबर ने महाराणा प्रताप को अधीनता स्वीकार कराने हेतु मानसिंह प्रथम को भेजा था परन्तु महाराणा प्रताप को संधि करने के लिए राजी करने में असफल।

→ हल्दीघाटी का युद्ध = अकबर ने महाराणा प्रताप के विरुद्ध कुंवर मानसिंह के नेतृत्व में विशाल शाही सेना को 3 अप्रैल 1576 को अजमेर से मेवाड़ के लिए रवाना क
→ मांडलगढ़ में डेरा डाला फिर खमनोर पहुंचे।
→ हल्दीघाटी के पास रक्ततलाई में 21 जून 1576 को युद्ध जिसमे मानसिंह की सेना विजयी हुई थी।

→ काबुल विजय - काबुल में हाकिम खां के विद्रोह को दबाने के लिए अकबर ने भगवन्तदास व पुत्र मानसिंह के नेतृत्व में सेना भेजी एवं जून 1585 में काबुल पर विजय
→ 1585 में मानसिंह को काबुल का सूबेदार नियुक्त किया जहां मानसिंह ने काबुल मे रेशनाइयो के विद्रोहो का समूल नष्ट कर दिया था।

B.Aadesh Kumawat

→ दिसम्बर 1587 में मानसिंह को बिहार की सूबेदारी
→ उड़ीसा विजय - 1592 में अफगान शासक नासिर खां को पराजित किया, यहां मानसिंह को बंगाल का सूबेदार बनाया
→ राजा मानसिंह व कूचबिहार के शासक लक्ष्मीनारायण तथा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित किया
→ राजा केदार से छीनकर 1604 में शिलामाता की मूर्ति लाए
→ उसे आमेर के महलों में प्रतिष्ठित करवाई

→ अहमदनगर अभियान - अकबर की मृत्यु के बाद सम्राट जहांगीर से सम्बंध अच्छे नही रहे। 1611 ई. में अहमदनगर अभियान के दौरान एलिचपुर में 6 जुलाई 1614 को राजा मानसिंह की मृत्यु।

→ इनके समय में रायमुरारीदास ने मानचरित्र की रचना
→ पुण्डरिक विट्ठल ने - रागचन्द्रोदय, रागमंजरी, नर्तन निर्णय
→ बिहार की सूबेदारी के समय मानसिंह ने रोहतासगढ़ में भव्य महल बनवाए
→ 1592 ई. में राजा मानसिंह ने आमेर के भव्य महलों का निर्माण करवाया।
→ वृन्दावन में गोविन्ददेव जी का मन्दिर एवं जगत शिरोमणि मन्दिर का निर्माण करवाया।
→ आमेर के राजा मानसिंह ने हरिनाथ, सुन्दरदास एवं जगन्नाथ जैसे विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया

→ मानसिंह स्वयं कवि, विद्वान, साहित्य प्रेमी थे।
→ इन्होने दो मुगल शासक अकबर व जहांगीर के साथ कार्य-
→ मीनाकारी कला राजस्थान में सर्वप्रथम लाने का श्रेय मानसिंह को जाता है।
→ मानसिंह ब्लू पॉटरी की कला लेकर आए थे।
→ भावसिंह (1614-1621) मानसिंह प्रथम के पुत्र लेकिन इनकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई।

मिर्जा राजा जयसिंह

पिता - महासिंह, माता - दमयन्ती (दौसा में पालनपोषण)

→ आमेर के शासक 11 वर्ष की उम्र में बने।

→ जयसिंह ने तीन बादशाहों - जहांगीर शाहजहां और औरंगजेब के अधीन मुगल सेवा की।

→ बादशाह शाहजहां ने 1638 ई. में जयसिंह को मिर्जा राजा की उपाधि दी एवं शहजादे शुजा के साथ कंधार अभियान पर भेजा

→ मिर्जा राजा जयसिंह ने शाहजहां के पुत्रों के मध्य हुए उत्तराधिकारी संघर्ष के प्रथम युद्ध, बहादुरके युद्ध (24 फरवरी 1658) में सुलेमान शिकोह (दारा का पुत्र) के साथ केन्द्रिय सेना का नेतृत्व कर शुजा की सेना को पराजित किया था।

परन्तु धरमत के युद्ध में औरंगजेब की विजय के बाद जयसिंह का झुकाव औरंगजेब की तरफ हो गया।

पुरन्दर की सन्धि (11 जून 1665)

→ मिर्जा राजा जयसिंह व शिवाजी के मध्य संधि

→ शिवाजी ने 35 में से 23 दुर्ग औरंगजेब को दिए

→ अपने पुत्र शम्भाजी को मुगल दरबार भेजा।

→ संधि के प्रत्यक्ष दृष्टा इतिहासकार नमुन्नि, व बर्नियर थे।

→ शिवाजी को औरंगजेब ने रामसिंह की हवेली / जयपुर हवेली (आगरा) में कैद किया था।

→ बीजापुर अभियान से लौटते समय बुरहानपुर (महाराष्ट्र) में औरंगजेब द्वारा जयसिंह की हत्या (1667) में करवाई

→ जयगढ़ - आमेर के समीप जयगढ़ दुर्ग का निर्माण

→ कुछ इतिहासकारों के अनुसार जयगढ़ का निर्माण राजा मानसिंह ने शुरू करवाया, पूर्ण जयसिंह ने करवाया

→ आमेर के महल - दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास सुख मन्दिर महल, दिलाराम के बाग आदि।

By Aadarsh Kumawat

→ औरंगाबाद में जयसिंहपुरा नगर बसाया।
→ दरबारी कवि बिहारी ने बिहारी सतसई लिखा
बिहारी का जन्म 1595 में ग्वालियर में हुआ।
→ बिहारी सतसई ब्रज भाषा में लिखा
→ बिहारी के एक-एक दोहे पर मिर्जा राजा जयसिंह
उन्हें एक-एक सोने की मुहर (अशर्फी) दिया करते।

→ दरबारी कवि - रामकवि ने जयसिंह चरित्र लिखा
— गोपाल तैलंग ने जय चम्पू संस्कृत साहित्य लिखा
— नरोत्तम दास ने सुदामा चरित्र लिखा
— जयसिंह ने काशी में संस्कृत विद्यालय बनवाया

→ पण्डित सभा - धार्मिक विवादों के निर्णय हेतु सभा
→ इसी पण्डित सभा के कहने पर शिवाजी
का राज्याभिषेक दूसरी बार हुआ।

→ कुलपति मिश्र - बिहारी का भान्जा जिसने लगभग
52 ग्रन्थों की रचना की, जिसमें दुर्गाभक्ति
चन्द्रिका, रस रहस्य, गुणरस रहस्य, संग्रामसार प्रसिद्ध है।

(बिशनसिंह) 1689-1700 ई.
→ रामसिंह (1667-1689) की मृत्यु के बाद
बिशनसिंह आमेर का शासक बना
→ औरंगजेब के आदेश पर विद्रोही जाट सेना
के नेता राजाराम को पराजित कर उसकी हत्या की
→ आमेर का प्रथम शासक जिसने आमेर की किलेबन्दी की।

youtube - Rajasthan Classes

सवाई जयसिंह (1700-1743)

→ विशनसिंह के ज्येष्ठ पुत्र सवाई जयसिंह
→ इनका मूल नाम - विजयसिंह था।
→ जयसिंह इनके छोटे भाई का नाम था -
→ बादशाह औरंगजेब ने सवाई की उपाधि देकर नाम जयसिंह और छोटे भाई का नाम विजयसिंह कर दिया।

→ सवाई जयसिंह ने सात मुगल बादशाहो की सेवा की
① औरंगजेब (1658-1707) ② बहादुरशाह प्रथम (1707-1712)
③ जहाँदरशाह (1712-1713) ④ फर्रुखशियर (1713-1719)
⑤ रफी-उद्-दरजात (1719) ⑥ रफी-उद्-दौला (1719)
⑦ मुहम्मदशाह (1719-1748)

→ उत्तराधिकारी युद्ध - औरंगजेब की मृत्यु (1707) के बाद हुए उत्तराधिकारी संघर्ष में जयसिंह ने आजम का पक्ष परन्तु मुअज्जम विजयी रहा, बहादुरशाह प्रथम नाम से बादशाह

→ जयसिंह के छोटे भाई विजयसिंह ने बहादुरशाह का साथ दिया विजयसिंह को आमेर का शासक घोषित कर आमेर का नाम इस्लामाबाद कर दिया था। (मोमिनाबाद भी)

→ मेवाड़ और मारवाड़ की सैनिक सहायता से सवाई जयसिंह ने आमेर पर अधिकार कर लिया
→ जून 1710 को बहादुरशाह ने उनके अधिकार को मान्यता दी

- देबारी समझौता - मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय एवं जोधपुर के राजकुमार अजीतसिंह के साथ समझौता
→ 1708 में अमरसिंह II की पुत्री चन्द्रकुंवरी का विवाह सवाई जयसिंह से इस शर्त पर हुआ कि इससे उत्पन्न पुत्र ही राजा बनेगा. इनसे माधोसिंह का जन्म हुआ लेकिन राजा ईश्वरीसिंह बने जो ज्येष्ठ पुत्र थे इस समझौते के कारण उत्तराधिकारी युद्ध प्रारम्भ हो गए।

By Gadaram Kumawat

→ जाटों का दमन - बादशाह मोहम्मदशाह के आदेश पर सवाई जयसिंह ने बदनसिंह जाट को अपनी ओर मिलाकर 1722 ई. में जाट विद्रोहियों का दमन किया।

→ जाटो पर इस युद्ध के उपलक्ष्य में मोहम्मदशाह ने जयसिंह को राजराजेश्वर, राजाधिराज व सवाई की उपाधि दी थी।

→ बदनसिंह को मोहम्मदशाह ने राजा की उपाधि दी तो सवाई जयसिंह ने बदनसिंह को ब्रजराज की उपाधि दी

⇒ मालवा की सूबेदारी
- बादशाह फर्रुखसियर ने पहली बार 1713 में मालवा की सूबेदारी दी। इसी दौरान 1715 में पीपलूद के युद्ध में मराठो को पराजित किया।
→ सूबेदारी - दूसरी बार - 1730, व तीसरी बार - 1732

हुरडा सम्मेलन - 17/07/1734 भीलवाड़ा
→ राजस्थान में मराठों का सर्वप्रथम हस्तक्षेप बूंदी में
→ 1734 में मराठा आक्रमण से बचने हेतु सवाई जयसिंह ने नाहरगढ़ (सुदर्शनगढ़) बनवाया था।

⇒ अध्यक्षता - जगतसिंह II, आयोजनकर्ता - सवाई जयसिंह
पूर्व में अध्यक्ष संग्रामसिंह II बनना तय हुए लेकिन इनकी मृत्यु हो गई।

⇒ धौलपुर समझौता - पेशवा बालाजी बाजीराव और सवाई जयसिंह के मध्य 1741 में धौलपुर का समझौता।
→ सवाई जयसिंह ने मराठों के साथ तीन युद्ध लड़े।
(A) पीलसूद का युद्ध - 1715 ई. (B) मन्दसौर का युद्ध - 1733
(C) रामपुरा (कोटा) का युद्ध - 1735 ई.

By Adarsh Kumawat

→ जयपुर नगर की स्थापना - 18 नवम्बर 1727
- नींव - पंडित जगन्नाथ ने रखी
- वास्तुकार - विद्याधर भट्टाचार्य
→ सिन्धु घाटी की तरह समकोण पर बसा शहर है।
नौ - चौकड़ियो का शहर भी कहा जाता है।
→ जयपुर की जानकारी बुद्धि विलास ग्रन्थ से मिलती है।
ये ग्रन्थ चाकसू के बख्तराम ने लिखा।
→ 1729 में जयपुर बनकर तैयार जयसिंह ने अपनी राजधानी
→ आजादी के बाद सत्यनारायण कमेटी के कहने पर
जयपुर को राज्य की राजधानी बनाया गया।

→ सवाई जयसिंह ने जयसिंहकारिका "नामक ज्योतिष ग्रन्थ लिखा
→ जयसिंह ने पुर्तगाली शासक एमानुएल से ज्योतिष
और नक्षत्र विज्ञान से सम्बंधित ग्रन्थ मंगवाए
→ पुर्तगाली शासक ने अपने दूत जेवियर डिसिल्वा को भेजा।
→ जयसिंह ने 1725 ई. में नक्षत्रो की शुद्ध सारणी तैयार
करवाई और उसका नाम तत्कालीन बादशाह के नाम
पर जीजमोहम्मदशाही रखा।

→ पुण्डरिक रत्नाकर ने जयसिंह कल्पद्रुम की रचना की
→ जगन्नाथ - सिद्धान्त कौस्तुभ और सम्राट सिद्धान्त रचनाएं लिखी
जगन्नाथ ने ही युक्लिड की रेखागणित का संस्कृत में अनुवाद किया
→ केवलराम - फ्रेंच ग्रन्थ "लागेरिथम" का विभाग सारणी नाम
से संस्कृत में अनुवाद किया।

→ जयपुर वेधशाला - जन्तर मन्तर के नाम से प्रसिद्ध
सम्राट नामक घड़ी लगी हुई, ऊंचाई मापने हेतु रामयंत्र लगा
2010 में जन्तर मन्तर विश्व धरोहर सूची में शामिल।
अलावा इसके दिल्ली वेधशाला - सबसे प्राचीन वेधशाला
मथुरा - ये नष्ट हो गई, बनारस (वाराणसी), उज्जैन
जयपुर वेधशाला का निर्माण 1734 में करवाया, जो सबसे बड़ी है।

→ नाहरगढ़ दुर्ग (1734) ई. में बनवाया
→ गोविन्ददेवजी का मन्दिर 1735 में ई. बनवाया
गौडीय सम्प्रदाय का प्रधान केन्द्र, मूर्ति वृंदावन से लाई।
→ सम्राट यंत्र = दुनिया की सबसे बड़ी सूर्य घड़ी
→ चन्द्रमहल - सिटी पैलेस में स्थित 7 मंजिले
चन्द्रमहल का निर्माण जयसिंह ने करवाया
→ जलमहल (जलमन्दिर) का निर्माण
→
→ जयबाण तोप (रावबका तोप) पहियो पर खड़ी
एशिया की सबसे बड़ी तोप
→ जयसिंह ने इसका निर्माण जयगढ़ के शस्त्रकारखाने में
→ तोप का वजन 50 टन और लम्बाई 20 फीट है।
→ इसकी मारक क्षमता 22 मील तक मानी जाती है।
→ वर्तमान में यह तोप जयगढ़ में रखी गई है।
→ कहा जाता है जयबाण तोप केवल एक बार परीक्षण के तौर पर चलाई गई थी - जिसका गोला चाकसू में गिरा, जहां गोला का बास नामक तालाब बन गया।

अश्वमेघ यज्ञ - (1740) भारत का अन्तिम हिन्दू सम्राट जिसने अश्वमेघ यज्ञ किया। प्रधान - पुण्डरिक रत्नाकर
→ इस यज्ञ के घोड़े को कुम्भाणी राजपूतो ने रोका था
→ यज्ञ की स्मृति हेतु पहाड़ी पर यूप-स्तम्भ की प्रतिष्ठा की।

→ जयसिंह ने हरमाड़ा में नहर बनवाई
→ साधुओ के लिए मथुरा में एक नगर बसाया
→ जयगढ़ दुर्ग में तोप ढालने का संयत्र बनाया
→ बून्दी के उत्तराधिकारी झगड़े में पड़कर राजस्थान में मराठो को आमंत्रित किया, जिसके भयंकर परिणाम आए
→ इन्ही के काल में 20 मार्च 1739 को दिल्ली पर नादिरशाह का आक्रमण हुआ।
→ सवाई जयसिंह की मृत्यु 1 सितम्बर 1743 को हुई।

सवाई ईश्वरीसिंह (1743-1750) ई.

→ सवाई जयसिंह की खीची रानी ने 1722 में इनको जन्म दिया
→ मेवाड़ी रानी ने 1728 ई. में माधोसिंह को जन्म दिया
→ उत्तराधिकारी संघर्ष टालने के लिए 1729 में महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय से रामपुरा का पट्टा माधोसिंह के नाम लिखवा दिया
→ 1743 ई. जयसिंह मृत्यु के उसका ज्येष्ठ पुत्र ईश्वरीसिंह जयपुर का शासक, परन्तु माधोसिंह ने विरोध किया।
→ उत्तराधिकारी संघर्ष प्रारम्भ हो चुका था।
→ राजमहल (टोंक) का युद्ध (1747 ई.)
ईश्वरीसिंह ने माधोसिंह, बून्दी के उम्मेदसिंह कोटा के दुर्जनशाल, मेवाड़ के जगतसिंह द्वितीय को पराजित

→ ईसरलाट (सरगासूली) जयपुर का विजयस्तम्भ, कुतुबमीनार राजमहल विजय के उपलक्ष में ईश्वरीसिंह ने त्रिपोलिया बाजार में ईसरलाट का निर्माण। (1749)

→ बगरू (जयपुर) का युद्ध (1748)
→ माधोसिंह व मराठों की की सेना ने ईश्वरीसिंह को पराजित किया
→ माधोसिंह को पांच परगने व मराठों को धन देना स्वीकार किया
→ ईश्वरी सिंह मराठों को धन नहीं दे सके और भयभीत होकर 13 दिसम्बर, 1750 ई. को आत्महत्या करली।
→ सवाई ईश्वरी सिंह ने मार्च 1748 में मानपुरा (अलवर) के निकट अहमदशाह अब्दाली की सेना को पराजित

⇒ सवाई माधोसिंह प्रथम - 7 जनवरी 1751 को शासक
→ मराठों ने सहायता की, इन्हीं के समय मराठों का कत्लेआम
→ द्वारिकाधीश भट्ट माधोसिंह के दरबार में थे इन्हीं ने वाणी वैराग्य ग्रन्थ लिखा।
→ काकोड़ का युद्ध - (1759) - मुगल बादशाह अहमदशाह ने 1754 को रणथम्भौर माधोसिंह को दिया परन्तु मराठा मल्हार राव होल्कर की सेना व माधोसिंह के मध्य युद्ध 1759 काकोड़ (टोंक) में माधोसिंह विजयी।

By Aadarsh Kumawat

→ भटवाड़ा का युद्ध (1761) कोटा राजुसाल आदेश पर झाला जालिम सिंह ने 2 दिसम्बर 1761 ई. को भटवाड़ा के युद्ध में माधोसिंह को पराजित किया।
→ मांवड़ा का युद्ध - (दिसम्बर 1767) माधोसिंह ने जाट राजा जवाहरसिंह को पराजित किया।

निर्माण →
→ रणथम्भौर के समीप सवाई माधोपुर नगर की स्थापना माधोसिंह ने 1763 ई. मे की।
→ जयपुर मे मोती डूंगरी महल
→ माधोसिंह ने नाहरगढ़ में अपनी नौ प्रेयसियो हेतु नौ महल
→ शीतला माता (चाकसू) मन्दिर का निर्माण
→ राज्य के खिलाड़ियो को सरक्षण दिया था।

→ जयपुर इतिहास का काला युग, 1768 से 1889 तक।
→ 71 वर्ष का समय नाबालिगो के राज का युग भी कहते।
→ सामन्तो ने बगावते की, कुशासन के कारण खजाना खाली

→ सवाई पृथ्वीसिंह (1768-1778)
→ इन्ही के समय ही मचेड़ी के जागीरदार प्रतापसिंह नरूका ने स्वतंत्र अलवर राज्य की स्थापना की

सवाई प्रतापसिंह (1778-1803)
- तुंगा का युद्ध = जुलाई 1787, महादजी सिंधिया व प्रतापसिंह महादजी सिंधिया की हार-जाते हुए कहा था कि जीता रहा तो जयपुर की मिट्टी में मिला दूंगा।
→ पारन का युद्ध (जून 1790) मराठा सेना व प्रतापसिंह प्रतापसिंह की हार, मराठा का नेतृत्व डी बोई (फ्रांसीसी) ने किया
→ मालपुरा का युद्ध (1800) मराठों ने सवाई प्रतापसिंह व जोधपुर भीमसिंह की सेनाओ को पराजित।
→ ब्रजनिधि उपनाम से कविगण लिखते थे, सकलन ब्रजनिधि ग्रंथावली कहलाया

→ संगीत सम्मेलन करवाकर राधागोविन्द संगीतसार ग्रन्थ की रचना करवाई, देवर्षि ब्रजपाल के निर्देशन में
→ प्रतापसिंह के संगीत गुरु चांद खां ने स्वर-सागर नामक संगीत ग्रन्थ की रचना की
→ प्रतापसिंह ने चांद खां को बुद्ध प्रकाश की उपाधि दी
→ गन्धर्व बाइसी / गुणीजनखाना = जिसमें बाईस संगीतज्ञों व विद्वानों की मंडली निवास करती थी, प्रतापबाइसी भी कहते
→ प्रतापसिंह के चित्रकार साहिबराम ने ईश्वरीसिंह की आदमकद मूर्ति बनाई थी।
→ 1778 जॉर्ज थॉमस ने प्रतापसिंह के समय जयपुर पर आक्रमण
→
— हवामहल का निर्माण = 1799 ई. में
शिल्पी - लालचन्द, गागरोन दुर्ग की तरह इसकी भी नींव नहीं है।
— खिड़कियां - 953, झरोखे - 152, पांच मंजिला
① शरद प्रताप मन्दिर ② रतन मन्दिर ③ विचित्र मन्दिर
④ प्रकाश मन्दिर ⑤ हवा मन्दिर

सवाई जगतसिंह (1803-1818) ई.
रसकपुर नामक वेश्या के प्रति विशेष लगाव के कारण ~~जगत~~ जगतसिंह को बदनाम शासक कहा जाता है।
इन्हीं के कारण कृष्णाकुमारी विवाद हुआ था
→ मेवाड़ के भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी का सम्बंध जोधपुर के भीमसिंह से हुआ, भीमसिंह (जोधपुर) की मृत्यु
→ पुनः कृष्णाकुमारी का रिश्ता जयपुर जगतसिंह (द्वितीय से किया इस कारण जगतसिंह II व जोधपुर के मानसिंह (भीमसिंह का भाई) के मध्य 1807 में परबतसर नागौर में गिंगोली का युद्ध।
→ 15 अप्रैल 1818 ई. को अंग्रेजों से सन्धि की।

youtube - Rajasthan classes

सवाई रामसिंह द्वितीय (1835-1880)

→ अल्पावस्था में शासक, ब्रिटिश सरकार ने संरक्षण में
→ मेजर जॉन लूडलो ने जनवरी 1843 में जयपुर का शासन
→ सतीप्रथा, दासप्रथा, कन्यावध, दहेज प्रथा रोकने का अभियान
→ 1857 स्वतंत्रता संग्राम में रामसिंह ने अंग्रेजो की सहायता
→ अंग्रेजी सरकार ने इन्हे सितारे हिन्द उपाधि प्रदान की
→ फरवरी 1876 ई. में प्रिंस ऑफ वेल्स प्रिंस अल्बर्ट ने जयपुर की यात्रा की। उनकी यात्रा की स्मृति में अल्बर्ट हॉल (म्यूजियम) का शिलान्यास अल्बर्ट के हाथो से

→ रामसिंह ने 1845 में जयपुर में मदरसा ए हुनरी महाराजा कॉलेज व संस्कृत कॉलेज का निर्माण।
→ इनका काल जयपुर में समाज सुधार का काल।
→ हुनरी मदरसा का नाम बदलकर (1886) में
→ राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट।
→ रामप्रकाश थियेटर बनवाया (उत्तरी भारत का प्रथम फारसी थिए.)
→ जयपुर में मेयो अस्पताल, संस्कृत भाषा चर्चा हेतु मोजमन्दिर
→ इन्ही के समय जयपुर रेल्वे लाइन दिल्ली से जुड़ा
→ रामनिवास बाग का निर्माण।

→ गुलाबी नगरी - 1868 में एडवर्ड पंचम के आगमन पर रामसिंह ने जयपुर को गुलाबी रंग से करवाया।
→ जयपुर के लिए सर्वप्रथम Pink city नाम का प्रयोग स्नेल्स रोड ने अपनी पुस्तक द रायल टाइम ऑफ इण्डिया में।

→ अल्बर्ट हॉल (हिन्दु-मुस्लिम-ईसाई) तीनो शैलियो मे।
वास्तुकार - स्टीवन जेकब,
→ जयपुर में ताजिए के साथ रामसिंह का तांत्रिया निकलता।
→ रामसिंह के समय स्वामी दयानन्द सरस्वती तीन बार जयपुर आए
→ रामसिंह के समय जयपुर में राजस्थान का पहला चिड़ियाघर
→ रामगढ़ बांध बनाया, इनकी भटयाणी रानी ने रामनिवास बंश बनाया
→ महाराजा रामसिंह का निधन - 1880 में हुआ।

माधोसिंह II (1880-1922).

→ अल्बर्ट हॉल का निर्माण पूर्ण. (गोद लिए पुत्र थे)
→ नाहरगढ़ में एक जैसे नौ महल (मा.प्र. ने भी बनवाए)
→ मुबारक महल बनवाया, ये भी तीनो शैलियो (हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई)
→ माधोसिंह द्वितीय ने कुलेरा में चर्च बनवाई
→ छपनियां काल के समय जयपुर के शासक माधोसिंह-II
→ माधोसिंह II ने लखनऊ में राजपूत कॉलेज के लिए 25000 रुपए व विक्टोरिया मेमोरियल को 3.50 लाख रुपए दान किए
→ माधोसिंह II के समय महाराजा कॉलेज में B.A. की कक्षाए शुरू
→ लंदन यात्रा (1902) - एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण में इंग्लैण्ड गए (ऑल्फिया जहाज से), 345.19 के दो चान्दी के पात्र बनवाए वर्तमान में सिटी पैलेस जयपुर में, गिनीज बुक में नामित।
→ 1911 में महारानी मेरी जयपुर आयी, झोटवाड़ा में विक्टोरिया रोड बनाई

⇒ मानसिंह II (1922-1949)

→ वृहद राजस्थान संघ के राजप्रमुख, 30 मार्च 1949 को
→ माधोसिंह II के दत्तक पुत्र थे।
→ इस पद (राजप्रमुख) इन्होने 1 नवम्बर 1956 तक कार्य किया।
→ राजपुताना रेजीडेंसी का मुख्य सेनापति बनाया गया।
→ स्पेन के राजपूत बनाए गए
→ सांगानेर हवाई अड्डा व SMS हॉस्पीटल बनवाया
→ इनका विवाह कूच बिहार (प. बंगाल) की राजकुमारी - गायत्री देवी से हुआ, लोकसभा में जाने वाली राज. की प्रथम महिला
→ गायत्री देवी ने जयपुर कप का प्रारम्भ किया।
→ मानसिंह द्वितीय की मृत्यु - लंदन में 1970 में पोलो खेलते समय
→ मानसिंह के पुत्र भवानीसिंह ने हाथी पोलो प्रारम्भ किया
→ 1974 में भवानीसिंह को ब्रिगेडियर की उपाधि, 1971 में महावीरचक्र
→ बांग्लादेश निर्माण में इनका अहम योगदान, (गायत्रीदेवी - 2009 निध.)
→ मानसिंह II जयपुर के कच्छवाह वंश के अंतिम शासक थे।
→ सवाई मानसिंह द्वितीय के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल को आधुनिक जयपुर का निर्माता, 1942 ई. में इस्माइल व दीवान शास्त्री के मध्य समझौता, जिसे जेन्टलमेन एग्रीमेंट कहा जाता है।

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत
राजस्थान क्लासेज : 8107670333

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh Kumawat

⇒ भरतपुर का जाट राजवंश ⇐

⇒ राजस्थान के पूर्वी भाग - भरतपुर, धौलपुर, डीग आदि क्षेत्रो पर जाट वंश का शासन था।
⇒ औरंगजेब के समय जाट शक्ति का उदय
⇒ प्रथम संगठित जन आन्दोलन हुआ।
⇒ जिसमे दिल्ली, आगरा, मथुरा के जाट किसान
⇒ 1670 ई. में गोकुल की हत्या के बाद 1685 में राजाराम जाट ने विद्रोह किया।
⇒ 1687 में सिकन्दरा (आगरा के पास) में स्थित अकबर के मकबरे को लूटा

⇒ सरदार चूड़ामन - 1688 ई. मे राजाराम की हत्या के बाद उसके भतीजे चूड़ामन जाट ने विद्रोह की कमान,
- जाट राज्य की स्थापना, थून का किला बनाकर थून को राजधानी बनाया।

⇒ बदनसिंह - (1722-1756)
- बदनसिंह अपने पिता चूड़ामन की मृत्यु के बाद बड़े भाई मोहकमसिंह के विरुद्ध, सवाई जयसिंह से मिल गए
→ सवाई जयसिंह की सहायता से 1722 में बदनसिंह शासक
→ सवाई जयसिंह ने ब्रजराज की उपाधि और डीग की जागीर प्रदान की
→ ने बदनसिंह को राजा की उपाधि दी
→ बदनसिंह ने डीग किले का निर्माण करवाया
→ डीग के जलमहलों का निर्माण इनके समय शुरू हुआ

⇒ सूरजमल जाट = बदनसिंह के पुत्र
⇒ 1733 में सोगर के निकट 1733 में भरतपुर किले का निर्माण
→ बदनसिंह ने जीते जी पुत्र सुरजमल को शासन बागडोर दी
→ जाटो का अफलातून व प्लेटो कहा जाता है।

⇒ सूरजमल ने डीग के महलों का निर्माण पूर्ण करवाया
⇒ सूरजमल ने 12 जून 1761 ई. को आगरा किले पर अधिकार
⇒ सूरजमल ने डीग से भरतपुर को राजधानी बनाया
⇒ लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर) का निर्माण 1733 से 1751 तक हुआ
⇒ 1763 ई. में नजीब खां रोहिला के विरुद्ध युद्ध में वीरगति

⇒ जवाहरसिंह (1763-1768) सूरजमल के पुत्र राजा बने
→ विदेशी लड़ाकों की एक पेशेवर सेना तैयार की
→ जवाहर सिंह ने 1764 ई. में (शाहआलम II) पर दिल्ली पर आक्रमण किया. लाल किले से अष्टधातु के दरवाजे लाकर भरतपुर दुर्ग में लगवाए।
→ दिल्ली विजय के उपलक्ष्य में जवाहर बुर्ज का निर्माण

⇒ रणजीत सिंह - 29 सितम्बर 1803 ई. को रणजीतसिंह ने अंग्रेजो के साथ मैत्री संधि की
राजस्थान में यह अंग्रेजो की प्रथम मैत्री सन्धि थी
(दूसरी संधि अलवर - दिसम्बर 1803)
→ भरतपुर संधि के समय लॉर्ड वेलेजली थे।
→ संधि की शर्तो के विरुद्ध भरतपुर शासक रणजीतसिंह ने 1804 में यशवतराव होल्कर मराठा को शरण दे दी
→ इस पर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजो ने भरतपुर पर 5 भयंकर आक्रमण किए. 10 हजारी सेना के साथ 5 माह तक घेरा डाला, फिर भी भरतपुर को नही जीत सके
→ अन्ततः 17 अप्रैल 1805 को घेरा उठा लिया गया।
→ इसी के बाद भरतपुर किले का नाम लोहागढ़ पड़ा
→ 1805 (अप्रैल) को नई सन्धि पर हस्ताक्षर हुए-
→ इस सन्धि से मराठों व अंग्रेजो के आक्रमणों से सुरक्षा मिली
→ स्वतंत्रता के बाद भरतपुर का मत्स्य संघ में विलय हुआ, 1949 में राजस्थान में मिला लिया गया।

अलवर राज्य का इतिहास →

→ 11 वीं सदी में अलवर का क्षेत्र (मेवात) अजमेर चौहानों के आधिपत्य में था
→ तराइन युद्ध 1192 पृथ्वीराज पराजय के बाद मेवाती स्वतंत्र हो गए।
→ 1527 ई. में खानवा युद्ध के बाद यह क्षेत्र मुगल साम्राज्य
→ फिर जयपुर का अंग हुआ
→ 1671 में जयपुर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह ने मौजमाबाद के कछवाहा सामंत कल्याणसिंह नरूका को माचेड़ी की जागीर प्रदान की।

→ 1774 ई. में इसके वंशज प्रतापसिंह को मुगल बादशाह शाहआलम ने जयपुर से स्वतंत्र कर माचेड़ी जागीर प्रदान की
→ 1775 में प्रतापसिंह नरूका ने भरतपुर राज्य से अलवर छीनकर उसे अपनी राजधानी बनाया।
→ 1775 में अलवर राज्य की स्थापना की गई।
→ बादशाह शाहआलम ने रावराजा बहादुर की उपाधि दी प्रतापसिंह नरूका को।

→ 1803 ई. में राव राजा बख्तावर सिंह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से संधि (सम्भवतः नवम्बर- 1803)
→ बख्तावर सिंह ने बख्तेश तथा चन्द्रमुखी कविताएं लिखी

→ विनयसिंह - अलवर में 80 खम्भों की मूसीरानी की छतरी
→ बलवन्तसिंह → दोनों को अंग्रेजी सरकार द्वारा शासक मान्यता
→ 1857 की क्रान्ति में विनयसिंह अलवर के शासक -
→ विनयसिंह ने रानी शीला के लिए 1845 में सिलीसेढ़ महल -
→ जयसिंह → नरेन्द्र मंडल सदस्य रूप में गोलमेज सम्मेलन में भाग
→ 1933 में इन्हें अंग्रेजी सरकार ने पद से निष्कासित (नरेन्द्रमंडल)
→ बाद में ये यूरोप चले गए. 1937 ई. पेरिस में इनका निधन
→ ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग की शिकार यात्रा के समय सरिस्का पैलेस निर्माण
→ विजयमन्दिर महल का निर्माण 1918 में जयसिंह ने करवाया।
→ 1938 में अलवर प्रजामंडल, मार्च 1949 में मत्स्य संघ के रूप में विलय

Dr. Jagdish Kumawat

धौलपुर राज्य का इतिहास

→ महात्मा बुद्ध काल में मत्स्य जनपद में शामिल -(हिस्सा) धौलपुर भरतपुर, अवरल क्षेत्र
→ 7वी सदी में ढोलनदेव तोमर ने यहां अपना शासन किया
→ 8 वीं सदी में चौहानो ने राज्य कायम किए।
→ 10 वी सदी में तोमरवंशीय धवलदेव ने बीलपुर के पास चम्बल नदी के तट पर धवलपुर बसाया। इसी नाम पर धौलपुर
→ फिर करौली यदुवंशी शासको ने धौलपुर को अधीन लिया
→
→ करौली के यादववंशी शासक धर्मपाल ने 1120 में धौलपुर दुर्ग-
→ 1502 ई. में सुल्तान सिकंदर लोदी व धौलपुर राजा विनायकदेव के मध्य युद्ध, कठिनाई से लोदी की विजय. धौलपुर पर अधिग्रहण
→ मोहम्मद जैफो को धौलपुर का शासक बनाया।
→ बाबर ने अपने अधिकार में लेने हेतु विद्रोह किया।
→ अकबर ने खानपुर महल बाड़ीकनिकट तालाबशाही झील पर बनाए
→ सामूगढ़ का युद्ध- औरंगजेब ने 1658 मे दारा शिकोह को उत्तराधिकारी युद्ध मे हराया था।

→ औरंगजेब की मृत्यु के बाद गुर्जर प्रतिहार शासक कल्याणसिंह ने धौलपुर को अपने अधिकार में लिया- 1761 तक रहा।
→ धौलपुर के पहले राना शासक कीर्तिसिंह बने।
→ ब्रिटिश शासन के दौरान 1857 की क्रान्ति में राव रामचंद्र एवं हीरालाल के नेतृत्व मे क्रान्तिकारी सैनिको ने धौलपुर पर अधिग्रहण
→ 1936 में धौलपुर प्रजामंडल का गठन।
→ मत्स्य संघ मे धौलपुर का विलय
→ धौलपुर शासक महाराजा उदभानसिंह मत्स्य संघ के राजप्रमुख
→ राजस्थान में विलय के बाद धौलपुर को भरतपुर जिले में शामिल किया गया था जो बाद में पृथक जिला बना।
→ 19 जुलाई 1997 को राज्य का 32वां जिला बना।
→ ~~करौली~~ धौलपुर राज्य का सबसे पूर्वी जिला है।

करौली का यादव वंश

⇒ करौली में यादव वंश के शासन की स्थापना विजयपाल यादव द्वारा 1040 ई. में की गई
→ विजयपाल ने बयाना को राजधानी बनाया
→ बयाना के विजयमन्दिर गढ़ का निर्माण विजयपाल ने।

⇒ तवनपाल (तिमनपाल) = तिमनगढ़ दुर्ग का निर्माण
⇒ मुहम्मद गौरी ने यहां के शासक कुंवरपाल को हराया
→ 1327 में अर्जुनपाल यादव ने पुनः मुगलों को हराकर शासन
→ अर्जुनपाल यादव ने 1348 में कल्याणपुर (करौली) बसाया
→ 1650 ई. को धर्मपाल ने करौली को राजधानी बनाया।

→ गोपालपाल ने करौली में मदनमोहन मन्दिर का निर्माण
→ हरबख्शपाल ने 9 नवम्बर 1817 ई. को अंग्रेजो से सन्धि
→ राजस्थान की पहली रियासत जिसने अंग्रेजो से अधीनस्थ संधि की
→ 1857 के विद्रोह के समय कोटा महाराव रामसिंह की सहायता हेतु मदनपाल ने सेना भेजी थी।
→ स्वामी दयानन्द सरस्वती राजस्थान में सर्वप्रथम 1865 ई. में करौली में मदनपाल के समय ही आए।

⇒ कोटा राज्य का इतिहास
⇒ हाड़ा चौहानो का शासन, प्रारम्भ में बून्दी का हिस्सा
→ शाहजहां के समय 1631 में बून्दी नरेश राव-रतनसिंह के पुत्र माधोसिंह को कोटा का पृथक राज्य दे दिया गया।
→ कोटा पूर्व में कोटिया भील के नियंत्रण में था।
→ जिसे बून्दी के चौहान वंश के संस्थापक देवा के पौत्र जैतसिंह ने मारकर अपने अधिकार में किया।
→ माधोसिंह का पुत्र औरंगजेब के विरुद्ध धरमत युद्ध में मारा गया

⇒ झाला जालिम सिंह (1769-1823) - कूटनीतिज्ञ, कुशल
→ 1817 ई. में फौजदार जालिमसिंह झाला ने कोटा से ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सन्धि की।

→ रामसिंह के समय सन 1838 में महारावल झाला मदनसिंह जो कि कोटा का दीवान एवं फौजदार था झाला जालिम सिंह का पौत्र था - महारावल झाला मदनसिंह
→ मदनसिंह को अलग कर झालावाड़ का स्वतंत्र राज्य दे दिया।
→ झालावाड़ 1838 मे अलग राज्य और राजधानी झालरापाटन
→ 1948 राजस्थान संघ में कोटा का विलय।
→ महाराव भीम सिंह इसके राजप्रमुख बने, कोटा राजधानी

(जैसलमेर का भाटी राजवंश)

→ जैसलमेर के भाटी स्वयं को चन्द्रवंशी यादव एवं श्री कृष्ण के वंशज मानते है।
→ भट्टीय नामक व्यक्ति ने 285 में भाटी वंश की स्थापना की
→ इसने भटनेर का किला बनाकर इसे अपनी राजधानी बनाया।
→ गजनी शासक दुण्डी ने मंगलराव भाटी को परास्त कर निकालदिया गजनी शासक ने तनोट को अपनी राजधानी बनाया।
→ देवराज भाटी ने लोद्रवा को पंवार शासकों से छीना राजधानी भी

→ 12 जुलाई 1155 ई. को रावल जैसलदेव भाटी ने जैसलमेर दुर्ग मे अपनी राजधानी स्थानांतरित की - जैसलमेर को।
→ जैसलमेर दुर्ग की स्थापना त्रिकोणी गोहाहरे पहाड़ी पर की गोडाहरा, त्रिकुटाचल या त्रिकूटगढ़ भी कहते है। सोनारगढ़, स्वर्ण गिरि अन्य नाम, किले का निर्माण →
→ जैसल के पुत्र शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
→ जैसलमेर मे ढाई साके हुए।
→ प्रथम साका - 1312-13 में मूलराज प्रथम व दिल्ली अलाउद्दीन के मध्य जिसमें राजपूत स्त्रियों ने जौहर किया। पुरुषो ने केसरिया
→ दूसरा साका - राव दूदा व फिरोजशाह शाह तुगलक
→ तीसरा साका → 1550 ई. में जैसलमेर के राव लूणकरण व कंधार के राज्यच्युत शासक अमीर अली के मध्य युद्ध
→ इसमें वीरो ने केसरिया किया लेकिन स्त्रियो ने जौहर नही किया।
→ अमीर खां शरणागत के विश्वासघात के कारण हुआ

→ रावल हरराय ने 1570 ई. मे नागौर दरबार में अकबर की अधीनता स्वीकार कर वैवाहिक सम्बंध स्था.
→ रावल अमरसिंह ने सिन्धु नदी का पानी जैसलमेर लाने के लिए अमरप्रकाश नामक नाले का निर्माण करवाया।
→ रावल अखैसिंह ने अखैशाही मुद्रा का प्रचलन
→ मूलराज द्वितीय 1818 ई. में यहां के शासक ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सन्धि की।

→ महारावल जवाहरसिंह जी 26 जून 1914 को शासक
→ आधुनिक जैसलमेर के निर्माता,
→ सर विण्डम लाइब्रेरी का निर्माण
→ भारत का अंतिम दुर्ग श्री मोहनगढ़ बनवाया।
→ इन्ही के समय स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा को जेल में अमानवीय यातनाएं देकर 3 अप्रैल 1946 को जिन्दा जला दिया गया, गुण्डाराज नामक पत्रिका लिखी।
→ सागरमल गोपा की 4 अप्रैल 1946 को मृत्यु हो गई।

→ जवाहर सिंह से पहले →
गजसिंह ने अफगान युद्ध (1878) में अंग्रेजो की सहायता की।
→ रणजीत सिंह के समय ही जैसलमेर की शिल्पकला को अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई।

→ एकीकरण के समय जवाहरसिंह ने जोधपुर महाराजा हनुमंत सिंह के साथ मिलकर पाकिस्तान में शामिल होने का प्रयास किया था।

→ 30 मार्च 1949 को जैसलमेर का राजस्थान में विलय
→ उस समय अंतिम शासक महारावल गिरधरसिंह थे।

RAJASTHAN CLASSES

पीडीएफ के किसी भी भाग पर क्लिक करने पर आपको youtube क्लास मिल जाएगी

सभी पीडीएफ निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी
पीडीएफ को ज्यादा से ज्यादा शेयर जरुर करें
आपके हित में सदैव तत्पर : आदर्श कुमावत
राजस्थान क्लासेज : 8107670333

राजस्थान क्लासेज के साथ जुड़कर अपनी तैयारी को पंख दीजिये और विषयानुसार बनी प्लेलिस्ट से पढ़कर अपनी तैयारी बेहतर करें

टेलीग्राम website व youtube ज्वाइन करने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें

By Aadarsh Kumawat